04 - अभिनव कला के मधुबन में भँवरे ने खिलाये फूल

05 - 75 वर्ष बाद भी संविधान नहीं जानते लोग

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 26 जनवरी, 2025

06 - बैतूल की बेटियां 26 जनवरी को दिल्ली राजपथ पर पेश...

07 - 'बिग बॉस' हारने वाले भी मालामाल हुए

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 117, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

पहली बात

इंडिया-फर्स्ट : सियासत के स्वार्थों पर संविधान का अंकुश

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

भारतीय गणतंत्र की पचहत्तरवीं वर्षगांठ के यादगार क्षणों में भारत की राजनीति में कटुता और कर्कशता के आयाम लोकतंत्र को परेशान करने वाले हैं। भारतीय संविधान की सर्वोच्चता और श्रेष्ठता के लिए आतुर संवादों के बीच राष्ट्र-हित और राजनीतिक-हितों के बीच आत्मघाती टकराव अविश्वसनीय है। इसके सामने लोकतंत्र की समग्रता भी बेबस नजर आ रही है। 'इंडिया-फर्स्ट' के आव्हानों के बीच राष्ट्र-हित और राजनीतिक-हितों के बीच टकराव हैरत पैदा करता है। सभी राजनीतिक दलों और खासकर विपक्ष की राजनीतिक भाव-भूमि में 'इंडिया-फर्स्ट'नदारद है।

राष्ट्र-हित के मुद्दों पर राजनैतिक मतैक्यता की जरूरत को अलग से प्रतिपादित करने की जरूरत नहीं है। राष्ट्र-हित के मुद्दों पर देश की राजनीति में मतैक्यता का इतिहास रहा है। इस पर गंभीरता से विचार की दरकार है कि मतैक्यता की भाव-भूमि पर कटुता और कर्कशता के ये कंटीले कैक्टस क्यों फल-फूल रहे हैं ? पिछले ग्यारह वर्षों से नरेन्द्र मोदी देश के प्रधानमंत्री के रूप में देश की बागडोर संभाल रहे हैं। नेता,प्रतिपक्ष के रूप में फिलवक्त राहुल गांधी विपक्ष के कमांडर हैं।

केन्द्र सरकार के पास स्थिरता और स्थायित्व की ग्यारंटी देने वाला स्पष्ट बहुमत है। विपक्ष के पास भी इतनी ताकत है कि वो अपने मुद्दों को प्रभावी तरीके से जनता के सामने रख सकता है। फिर यह टकराव क्यों...? पक्ष-विपक्ष में राजनीतिक हितों पर मत-भिन्नता समझ में आती है, लेकिन राष्ट्र हित के सवालों पर मन-भिन्नता को कैसे जायज माना जा सकता है? यहां राजनीतिक-एकात्मता क्यों नहीं है?

ताजा अतीत की बात करें तो प्रधानमंत्री नरसिंहराव और अटलबिहारी बाजपेई के नाम फलक पर चमकने लगते हैं। राजनीति में अपनी-अपनी भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए राष्ट्र-हित के सवालों पर इन दोनों के बीच उल्लेखनीय ऐतिहासिक तालमेल रहा है। प्रधान मंत्री नरसिंह राव ने 27 फरवरी 1994 को अटल बिहारी बाजपेई को संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारतीय प्रतिमंडल का प्रमुख बनाकर भेजा था। राजनीतिक गलियारों में इस बात की चर्चा होती रहती है कि अपनी बिदाई के वक्त पीवी नरसिंह राव ने नव निर्वाचित प्रधानमंत्री बाजपेई से कहा था परमाणु परीक्षण की तैयारियां पूरी हैं। अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के चलते मैं यह काम नहीं कर सका, आप जरूर करना...। यह सामंजस्य और सदाशयता अब क्यों नदारद है? देश में सभी राजनीतिक दलों के नेताओं की भूमिकाओं में सदाशयता का गौरवशाली इतिहास क्यों बिखरने लगा है?

राष्ट्र-हित और राजनीतिक-हित की परिभाषा सहज है। सियासत और सत्ता में इसका अलग-अलग इस्तेमाल होता है। सामान्य विवेचना में राष्ट्र-हित के मायने देश के लक्ष्यों और महत्वाकांक्षाओं का वह प्रतिबिम्ब है, जिसे हर देश अपनी जनता की खुशहाली के लिए हासिल करना चाहता है, जबकि राजनीतिक हित किसी भी सियासी पार्टी या उसके नेता की अतिशय सत्ता-लोलुपता का पर्याय होते हैं। राष्ट्रहित देश के आर्थिक,सैन्य, सांस्कृतिक और भौगोलिक पहलुओं से जुड़ा होता है, जबकि राजनीतिक हित किसी भी दल या नेता के स्वार्थ से जुड़ा रहता है। पक्ष-विपक्ष में अनौपचारिक संवादों के माध्यम से भारत में भी मोटे तौर पर सेना और सरहद हमेशा सवालों से परे रही है। विदेश-नीति और विदेशों में भी भारत की छबि को लेकर मतैक्य रहा है। सेना, सरहद और विदेशी मामलों में पक्ष-विपक्ष के बीच यह राजनीतिक-समझ देश के राजनेताओं की परिपक्वता की निशानी थी। लेकिन वर्तमान काल-खंड इसका अपवाद है। सेना और सरहद पक्ष-विपक्ष के बीच सियासी-बढ़त बनाने का टूल बन चुके हैं। विपक्ष पुलवामा जैसी घटनाओं को चुनावी नजरिए से नापता-तौलता है। पुलवामा जैसे कई उदाहरण मौजूद हैं, जो राष्ट्र हित की बलि लेते नजर आते हैं। बहरहाल, पक्ष-विपक्ष के बीच कटुता और कर्कशता की कील और कांटों से निपटने का एक मात्र औजार भारत का संविधान है, जिसकी भाव-भूमि एकात्म राजनीति की अखंड ज्योति से सजी है। संविधान में वह ताकत अंतर्निहित है, जिसके माध्यम से राष्ट्र-हित के लिए घातक राजनीतिक हितों को साधने वाली किसी भी गतिविधि पर अंकुश लगाए जा सकते हैं। लेकिन फिलवक्त संविधान का अस्तित्व और औचित्य ही सवालों के घेरे में हैं। विपक्ष का आरोप है कि केन्द्र सरकार संविधान को बदलना चाहती है। केन्द्र सरकार संविधान की सर्वोच्चता और सम्मान के लिए अपनी प्रतिबद्धता साबित करने के लिए हर संभव उपाय कर रही है। हर साल 'संविधान दिवस' मनाने का संकल्प इस दिशा में उठाया गया उल्लेखनीय कदम है।

फिर भी संविधान की रक्षा के नाम पर राजनीति के गलियारों में कौतुक जारी है। राहुल गांधी और उनके संगी-साथी संविधान की लाल किताब सीने से लगा कर घूम रहे हैं, जबकि प्रधानमंत्री मोदी और उनके समर्थक बाबा साहब अंबेडकर की मशाल लेकर उन धुंधलकों को दिखा रहे हैं, जो कांग्रेस की कमजोर नस माने जाते हैं। बहरहाल, संविधान की रक्षा की इस कथित लड़ाई में शुभ यह है कि संविधान के लेकर लोगों के बीच चर्चाएं और विमर्श का नया सिलसिला शुरू हो गया है। 26 जनवरी,1950 को लागू भारतीय संविधान में अभी तक याने जनवरी 2025 तक 106 संशोधन हो चुके हैं। आजादी के बाद पचहत्तर सालों में देश की परिस्थितियों कई उतार-चढ़ाव आए हैं। उपरोक्त संशोधन संविधान में देश-काल और परिस्थितियों का रूपान्तरण हैं। मोटेतौर पर किसी भी लोकतंत्र में किसी भी निर्वाचित सरकार को संविधान के अस्तित्व के माध्यम से ही परिभाषित किया जाता रहा है। अथवा संविधान को राजनीति के मौलिक कानून के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। याने संविधान में राजनीतिक शक्ति के प्रयोग को प्रभावी रूप से नियंत्रित करने की व्यवस्थाएं होती हे। समकालीन दुनिया में संवैधानिक सरकारों भी आमतौर पर लोकतंत्र में ही होती हैं और ज्यादातर मामलों मे उन्हें संवैधानिक लोकतंत्र या संवैधानिक लोकतांत्रिक व्यवस्था कहा जाता है।

राजनीतिक दल संवैधानिकता और लोकतंत्र के बीच सेतु का काम करते हैं, जो स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव व्दारा सत्ता का अधिकार हासिल करते हैं। यह जनादेश संविधान के अनुसार सरकार चलाने का अधिकार देता है। लेकिन इन राजनीतिक दलों का चाल-चलन ही संविधान के लिए खतरा बन जाता है। सत्ता की अतिशय चाहत और हठधर्मी का वायरस निरंकुशता का पैगाम लेकर फैलने लगता है, जो लोकतंत्र की मर्यादाओं को कमजोर करने वाला होता है। वैसे संविधान के विरोध और समर्थन में पक्ष-विपक्ष के बीच राजनीतिक होड़ लोकतंत्र को ताकतवर बनाने में कारगर रूप से सहायक सिद्ध होने वाली है।

बहरहाल, देश में संविधान पर यह विवाद कई मायनों मे शुभ है। किसी भी लोकतंत्र के लिए इससे बेहतर परिस्थितियां नहीं हो सकती हैं कि उसका संविधान और सिद्धांत देश के राजनीतिक-केन्द्र में शाश्वत बने रहे। फिलवक्त भारतीय राजनीति ऐसे ही दौर से गुजर रही है, जबकि, लोकतंत्र के प्रहरी के रूप में संवैधानिक फिल्टर हर कदम पर सियासी दलों के नापाक मंसूबों को बारीकी से छान रहा है। सियासी रस्मों और कसमों के जरिए सभी पार्टियों की कोशिश है कि वो ज्यादा से ज्यादा संविधान की खैरख्वाह नजर आए। संविधान की सियासी फिक्र के ये नजारे प्रमुख राजनीतिक दलों की गतिविधियों में हर कदम पर नजर आते हैं। बहरहाल, इन रस्मों और कसमों में सियासत ज्यादा है, जिसे जनता बखूबी समझ रही है, लेकिन नुक्कड़ नाटकों की तरह संविधान के संवादों का मंचन जारी है।

सुप्रभात

कलम, आज उनकी जय बोल
जला अस्थियाँ बारी-बारी,
चिटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर,
लिए बिना गर्दन का मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
हमने लिखा लहू से अपनी,
स्वतंत्रता की कहानी,
अमिट रहेगी युग-युग तक,
ये अमर अमिट निशानी।
जो अगणित लघु दीप हमारे,
तूफानों में एक साथ जले,
आज उनकी भी जय बोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
नहीं मांगते स्नेह मुँह खोल,
जिनका प्रबल वेग बोलता है,
शोणित का प्रवाह बोलता है,
सिंहासन किसका डोलता है,
भू पर किसका सिंहासन डोलता है?
आज उनके त्याग की जय बोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
अगणित वीर हुए बलिदान,
तब हमने पाई आज़ादी,
उनकी ही कुर्बानी से,
मिली हमें ये बरबादी।
आज उनके बलिदानों की,
गाथाओं की जय बोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।
धरती रही अभी तक डोल,
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल,
आज उनके दृढ संकल्प की,
अटल प्रतिज्ञा की जय बोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

- रामधारीसिंह दिनकर

गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं

गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व पर 26 जनवरी को 'सुबह सवेरे' कार्यालय में अवकाश रहेगा। अखबार का अगला अंक 28 जनवरी को प्रकाशित होगा। 'सुबह सवेरे' के सभी पाठकों को 76वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। सं.

भोपाल में गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर रोशनी से जगमग विधानसभा भवन। छाया : प्रवीण वाजपेयी

हमारा संविधान जीवंत दस्तावेज,यह हमारी सामूहिक अस्मिता का मूल आधारःराष्ट्रपति

गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति का संबोधन,देश के लोगों को दी बधाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। 76वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्र के नाम संबोधन दिया। अपनी स्पीच की शुरुआत उन्होंने देश को बधाई देकर की। उन्होंने कहा कि हमारा संविधान एक जीवंत दस्तावेज है, जो हमारी सामाजिक अस्मिता का मूल आधार है। किसी राष्ट्र के इतिहास में 75 साल का इतिहास पलक झपकने जैसा होता है। भारत के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता है। इस काल खंड में भारत की चेतना जागी। इस ऐतिहासिक अवसर पर आप सबको संबोधित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। द्रौपदी मुर्मू देश की 15वीं राष्ट्रपति हैं। वे इस सर्वोच्च संवैधानिक पद पर पहुंचने वाली देश की पहली आदिवासी और दूसरी महिला राष्ट्रपति हैं। 64 साल की मुर्मू ने साल 2022 देश में सबसे कम उम्र में राष्ट्रपति बनने का रिकॉर्ड भी बनाया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का

प्रदेश में निवेश के लिए यूके व जर्मनी के बाद जापान दौरा

- 4 दिवसीय यात्रा के लिये 27 जनवरी को रवाना होंगे
- निवेश के साथ साझेदारी को मिलेगी नई उड़ान

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का मध्यप्रदेश को औद्योगिक हब बनाने का संकल्प आकार लेने लगा है। देश के महानगरों में उद्योगपतियों के साथ इंटरेक्शन, प्रदेश में रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव और जर्मनी-यूके में निवेश की अपार सफलता के बाद अब मुख्यमंत्री डॉ. यादव का कारवां जापान की 4 दिवसीय यात्रा के लिये 27 जनवरी को रवाना होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव जापान के टोक्यो, ओसाका और कोबे जैसे प्रमुख शहरों में स्थानीय उद्योगपतियों से म.प्र. में निवेश के संबंध में संवाद करेंगे। साथ ही 24 और 25 फरवरी को भोपाल में आयोजित होने वाली ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट के लिए आमंत्रित करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का जापान दौरा मध्यप्रदेश से जापान के उद्योगपतियों और औद्योगिक संगठनों को निवेश अवसरों से अवगत कराएगा। भारत-जापान संबंधों को और अधिक मजबूत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

28 जनवरी : टोक्यो से शुरूआत

मुख्यमंत्री डॉ. यादव 27 जनवरी की शाम इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट नई दिल्ली से टोक्यो के लिए रवाना होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव 28 जनवरी की दरम्यानी रात 2:25 बजे टोक्यो के हानेडा हवाई अड्डे पर पहुंचेंगे। जहाँ से सुबह 3:45 बजे इम्पीरियल होटल पहुंचेंगे। यहां फ्रेंडस ऑफ एमपी की जापान टीम से मुलाकात करेंगे। सुबह 9:15 बजे भारतीय राजदूत महामहिम श्री सिबी जॉर्ज से उनके निवास पर औपचारिक मुलाकात करेंगे।

एमपी के चार अफसरों को प्रेसिडेंट मेडल

पुलिस-होमगार्ड के 17 अधिकारियों-कर्मचारियों को मेरिटोरियस सर्विस अवॉर्ड

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने गणतंत्र दिवस 2025 के लिए एमपी के चार आईपीएस अफसरों को प्रेसिडेंट मेडल और 17 अधिकारियों व कर्मचारियों को मेरिटोरियस सर्विस अवॉर्ड से नवाजा है। इस बार किसी अधिकारी को गैलेंट्री अवॉर्ड (वीरता पदक) नहीं मिला है।

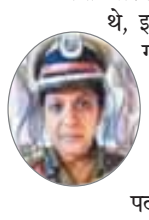

करेक्शनल सर्विस में एक अधिकारी को प्रेसिडेंट मेडल और पांच को मेरिटोरियस अवॉर्ड दिया गया है। अवॉर्ड पाने वालों में एडीजी मकरंद देउस्कर, रुचिवर्धन मिश्रा, हिमानी खन्ना, डीआईजी बीरेंद्र कुमार सिंह, शैलेंद्र सिंह चौहान, राकेश खाखा शामिल हैं।

अवॉर्ड प्रस्ताव भेजने के समय ये अफसर जूनियर पदों पर थे, इसलिए इन्हें आईजी, डीआईजी, एसपी बताया गया है। अब ये सभी प्रमोट हो चुके हैं।

केंद्र सरकार द्वारा हर साल 15 अगस्त और 26 जनवरी को पुलिस और होमगार्ड सेवा से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों को वीरता पदक, पुलिस सेवा पदक और सराहनीय सेवा पदक दिए जाते हैं। केंद्र सरकार द्वारा यह पदक देने का ऐलान 25 जनवरी और 14 अगस्त को किया जाता है।

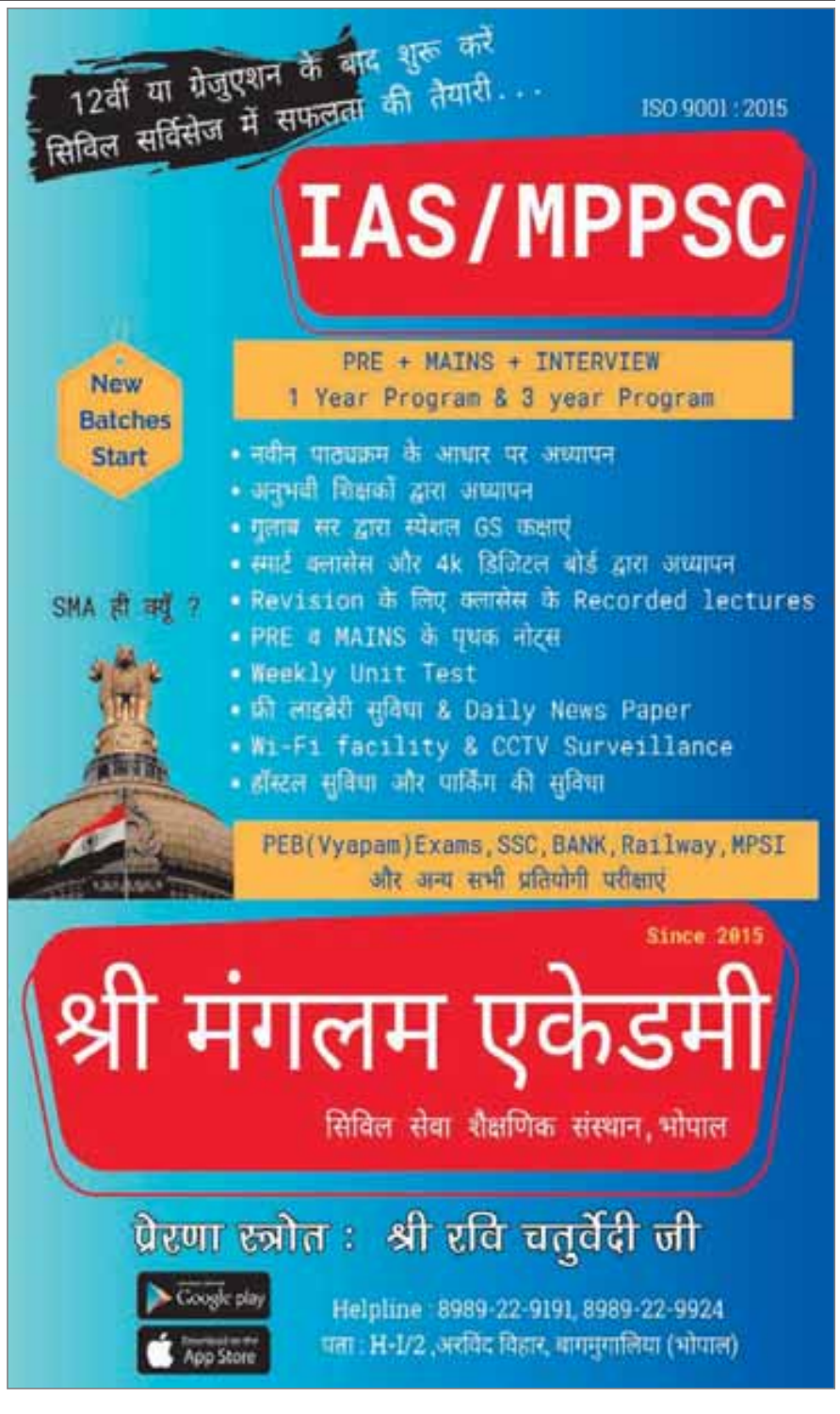

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 26 जनवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

डॉ. अरुण खोबरे का नाम लंदन बुक ऑफ रिकॉर्डस में दर्ज

भोपाल। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में वरिष्ठ सहा. प्राध्यापक एवं जनसंपर्क अधिकारी डॉ. अरुण कुमार खोबरे को लंदन बुक ऑफ रिकॉर्डस ने सम्मानित किया है । कवि, गीतकार एवं मीडिया गुरु, डॉ. खोबरे को सम्मान स्वरूप लंदन बुक ऑफ रिकॉर्डस ने उनकी लिखी विश्व की सबसे बड़ी हस्तलिखित श्रीरामचरित मानस के लिए प्रमाण पत्र, मेडल एवं ट्रॉफी प्रदान की है। डॉ.अरुण ने इस सम्मान को भगवान श्रीराम एवं हनुमान जी को समर्पित किया है। उल्लेखनीय है कि इससे पहले भी डॉ. खोबरे को देश-विदेश की कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के एक छोटे से गांव बदनूर में जन्मे डॉ. अरुण खोबरे को उनकी इस उपलब्धि पर शुभचिंतकों ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

जीएमसी भोपाल की राष्ट्रीय मिजल्स रूबेला प्रयोगशाला को डब्ल्यूएचओ से मान्यता मिली

भोपाल। गांधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल में राष्ट्रीय मिजल्स रूबेला प्रयोगशाला (एनएमआरएल) भोपाल इकाई को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) से प्रशंसा और मान्यता पत्र मिला है। पत्र में वैश्विक अनुशंसित प्रोटोकॉल के अनुसार इसे डब्ल्यूएचओ-कुशल प्रयोगशाला के रूप में मान्यता दी गई है। 2012 में स्थापित एनएमआरएल भोपाल लैब पश्चिमी मध्य प्रदेश के 32 जिलों में मिजल्स और रूबेला के उन्मूलन हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लैब का संचालन डॉ. दीप्ति चौरसिया विभागाध्यक्ष, के नेतृत्व में डॉ. जया लालवानी, सह - प्राध्यापक और डॉ. पी नागराज, वैज्ञानिक के द्वारा किया जा रहा है। डब्ल्यूएचओ द्वारा यह मान्यता उच्च गुणवत्ता वाले परीक्षण के लिए लैब की प्रतिबद्धता और क्षेत्र में मिजल्स और रूबेला उन्मूलन के चल रहे प्रयासों में इसके महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करती है।

इंदौर देश का वेटलैण्ड शहर बनना हमारे लिये गौरव का क्षण : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

रामसर द्वारा जारी वेटलैण्ड शहर की सूची में इंदौर और उदयपुर शामिल

भोपाल। प्रदेश के नाम एक और उपलब्धि तब जुड़ गई जब रामसर कन्वेंशन द्वारा इंदौर शहर को प्रतिष्ठित वेटलैण्ड सिटी घोषित किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर की इस उपलब्धि को देश और प्रदेश की उपलब्धि बताया है। उन्होंने कहा कि यह मध्यप्रदेश केलिए गौरव का क्षण है। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाली अंतर्राष्ट्रीय संस्था रामसर द्वारा शनिवार को 31 वेटलैण्ड शहरों की सूची जारी की गई है। इसमें उन शहरों को सम्मानित किया गया है जो अपने वेटलैंडस का संरक्षण करने के साथ-साथ शहरी विकास में भी उत्कृष्ट योगदान देते हैं। इसमें पहली बार देश के 2 शहरों इंदौर और उदयपुर को भी शामिल किया गया है।

देश की पहली वेटलैण्ड सिटी इंदौर

रामसर कन्वेंशन द्वारा शनिवार को दुनिया के 31 शहरों को वेटलैण्ड सिटी के रूप में मान्यता देते हुए घोषणा की है। देश में रामसर द्वारा पहली बार दो शहरों को एक साथ वेटलैण्ड शहर के रूप में मान्यता दी है। इनमें इंदौर और उदयपुर को देश के पहले दो शहरों के रूप में शामिल किया गया है। जारी सूची में शामिल विश्व के अन्य शहर इस प्रकार हैं : अर्जेंटीना के ट्रेलेव, बेल्जियम के मेचेलेन, बोत्सवाना के कसाने-कजुंगुला, शाकावे, चिली के वाल्डिविया, चीन के चोंगमिंग, डाली, फूज़ौ, हांग्जो, जिउजियांग, ल्हासा, सूज़ौ, वेनझोउ, यूयांग, फ़्रांस के एब्बेविल, आर्ल्स, हैम्पिग्नी, ईरान (इस्लामिक गणराज्य) के बाबोल, बंदर किआशर, गैंडोमन, जापान के नागोया शहर, मोरक्को के मेहद्या, फिलीपींस के बलांगा शहर, पोलैंड के पॉज़नान, कोरिया गणराज्य के गिम्हे, मुंगयोंग, सर्बिया के नोवी साद, स्विटजरलैंड के जिनेवा और जिम्बाब्वे के विक्टोरिया फॉल्स को भी शामिल किया गया है।

मुंबई पुलिस ने कलेक्ट किया सैफ का ब्लड सैंपल

हमले के आरोपी के कपड़े भी फॉरेंसिक जांच के लिए भेजे

मुंबई (एजेंसी)। बॉलीवुड एक्टर सैफ अली खान पर 16 जनवरी को हमला हुआ था। उनके घर में घुसकर बांग्लादेशी घुसपैठिये ने उन पर चाकू से हमला किया था, जिसमें वो बुरी तरह घायल हो गए थे। इस मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है और मामले में कार्रवाई जारी है। अब मुंबई पुलिस ने इस केस में जांच के लिए आरोपी और एक्टर के ब्लड सैंपल कलेक्ट किए गए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक मुंबई पुलिस के सूत्र ने बताया है कि आरोपी ने घटना के वक्त जो कपड़े पहने थे, उन्हें जांच के लिए अपने कब्जे में ले लिया गया है। इसके साथ ही ये बताया गया है कि आरोपी के कपड़ों पर खून के निशान मिले हैं। अधिकारी ने अपने बयान में कहा है कि सैफ अली खान के ब्लड सैंपल, घटना के दिन उन्होंने जो कपड़े पहने थे वो और अटैकर के कपड़े फॉरेंसिक लैब में जांच के लिए भेज दिए गए हैं। जिससे ये पता चल जाए कि हमलावर के कपड़ों पर सैफ अली खान के खून के ही निशान हैं। बता दें कि आरोपी को गिरफ्तार कर 5 दिन की पुलिस कस्टडी में भेजा गया था, जिसके बाद अब उनकी कस्टडी को बढ़ाने की मांग हो रही है, जिससे जांच में मदद मिल सके। इस मामले में सवाल उठ रहा है कि जिसे गिरफ्तार किया गया और जो सीसीटीवी में नजर आया दोनों अलग है।

गणतंत्र दिवस

प्रो. नीलिमा गुप्ता

(कुलपति, डॉ हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

सभ्यता, एकता और परंपरा का प्रतीक हमारा भारत

'एक राष्ट्र एक नाम भारत' के संकल्प को लेकर हमें राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। हमें राष्ट्रीय गौरव, शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से लोगों को राष्ट्रीय अखंडता के महत्व के बारे में बताना चाहिए। हमें सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच एकता और समझ को बढ़ावा देना चाहिए, राष्ट्रीय त्योहारों जैसे कि स्वतंत्रता दिवस और गणत्रंत दिवस का आयोजन करना चाहिए ताकि लोग राष्ट्रीय एकता और अखंडता के महत्व को समझ सकें।

हमारे देश का प्राचीन नाम भारत है। भारत अरे शाब्दिक अर्थ होता है ज्ञान में रत (प्रवृत)। भारत दरअसल भारतवर्ष का संक्षिप्त रूप है जिसका उपयोग स्थानीय धर्मों के साहित्य में व्यापक रूप से किया जाता है। भारतवर्ष शब्द भारत नामक वैदिक जनजाति के नाम से लिया गया है जिसका उल्लेख ऋग्वेद में आर्यावर्त के प्रमुख लोगों में से एक के रूप में किया गया है। 1949 में संविधान सभा द्वारा भारत गणराज्य के आधिकारिक नाम के रूप में अपनाया गया था। यह शब्द हमारे इतिहास और संस्कृति से जुड़ा हुआ है।

भारत नाम प्रयोग करते ही हम भारत वासियों में ज्ञान के सागर का देश होने का बोध होता है। परन्तु कुछ लोग इसे इंडिया अथवा हिंदुस्तान के नाम से भी पुकारते हैं। भारत की एकता और अखंडता को यदि हमें प्रतिबंधित करना है तो एक राष्ट्र, एक नाम, भारत से ही पुकारना चाहिए। यह हमें याद दिलाता है कि भारत एक विविध और बहुसांस्कृतिक देश होने के साथ ही, हम सभी एक ही राष्ट्र के नागरिक हैं।

एक नाम भारत हमें स्मरण दिलाता है कि भारत एक एकल और अखंड राष्ट्र है जिसमें विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोग रहते हैं। यह विचार हमें अपने राष्ट्र के गौरव और समृद्धि की याद दिलाता है और हमें सामाजिक संरक्षण और एकता की ओर बढ़ने के लिए, प्रेरित करता है।

एक राष्ट्र एक नाम भारत के संकल्प को लेकर हमें राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। हमें राष्ट्रीय गौरव, शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से लोगों को राष्ट्रीय अखंडता के महत्व के बारे में बताना चाहिए। हमें सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बीच एकता और समझ को बढ़ावा देना चाहिए, राष्ट्रीय त्योहारों जैसे कि स्वतंत्रता दिवस और गणत्रंत दिवस का आयोजन करना चाहिए ताकि लोग राष्ट्रीय एकता और अखंडता के महत्व को समझ सकें। हमें मीडिया का उपयोग करके राष्ट्रीय एकता और अखंडता के महत्व के बारे में लोगों को अवगत कराना चाहिए तभी हम सही मायने में भारत के नाम को सार्थक कर सकेंगे।

एक नाम से बुलाने से राष्ट्र की पहचान और सम्मान में वृद्धि होती है। इसके अलावा, यह विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोगों को एक साथ लाने में मदद करता है और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है। यह राष्ट्र को विश्व स्तर पर एक मजबूत और एकीकृत इकाई के रूप में प्रस्तुत करता है। एक नाम से बुलाने से विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों के लोगों को एक साथ लाने में मदद मिलती है, विभिन्न समुदायों के बीच समझ और सहयोग को बढ़ावा देता है, राष्ट्रीय गौरव, गर्व और आत्मसम्मान में वृद्धि होती है। इतना ही नहीं, यह राष्ट्र को विश्व स्तर पर एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली इकाई के रूप में भी प्रस्तुत करता है।

यदि हमें एकता का प्रतीक बनना है तो हमे जागना होगा और देश की जनता को भी जगाना होगा। ऐसा करने के लिए हम सोशल मीडिया पर अभियान चलाकर, हस्ताक्षर अभियान चलाकर, संगोष्ठियां, परिचर्चा का आयोजन करके, सब को एकजुट होकर व्यापक रूप से 'भारत' को प्रचलित लेने का संकल्प लेना होगा। हमारी सभ्यता, एकता और परंपरा का प्रतीक है भारत।

हम कभी नहीं भूलेंगे कि भारत ने हमारे लिए क्या किया है

● पीएम मोदी के साथ मुलाकात पर बोले इंडोनेशिया के राष्ट्रपति ● दिल्ली के हैदराबाद हाउस में दोनों ने गर्मजोशी से मिलाया हाथ ● राष्ट्रपति भवन में गार्ड ऑफ ऑनर से किया गया प्रबोवो का स्वागत

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को दिल्ली के हैदराबाद हाउस में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो के साथ बैठक की। बैठक से पहले पीएम मोदी ने प्रबोवो का गर्मजोशी से स्वागत किया और दोनों नेताओं ने हाथ मिलाए। बैठक के बाद अपने संबोधन में पीएम मोदी ने कहा कि, इंडोनेशिया भारत के पहले गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि देश था। यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि जब हम गणतंत्र के 75 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं, तो इंडोनेशिया एक बार फिर इस ऐतिहासिक अवसर का हिस्सा है। मैं राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो का भारत में स्वागत करता हूं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि दोनों नेताओं के बीच चर्चा भारत और इंडोनेशिया के संबंधों को और मजबूत करेगी। जायसवाल ने इसे भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति के एक महत्वपूर्ण साझेदार के साथ संबंधों को आगे बढ़ाने वाला कदम बताया। भारत और इंडोनेशिया के बीच समझौतेः रक्षा सहयोग बढ़ाने के लिए डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग और सप्लाई चेन पर मिलकर काम करेंगे। दोनों देश समुद्री सुरक्षा, साइबर सुरक्षा और आतंकवाद से निपटने में सहयोग करेंगे। फिनटेक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर जैसे क्षेत्रों में सहयोग को और मजबूत करने पर सहमति। भारत इंडोनेशिया के साथ स्वास्थ्य और खाद्य सुरक्षा से जुड़ी जानकारियां शेयर करेगा।

केंद्र सरकार ने की 942 गैलेंट्री अवॉर्ड की घोषणा

95 जवानों को वीरता, 101 को राष्ट्रपति और 746 को मिलेगा सराहनीय सेवा सम्मान

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने शनिवार को वीरता (गैलेंट्री) और सेवा पदक (सर्विस मेडल) के लिए 942 नामों की घोषणा की।

विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति पदक पाने वाले 101 लोग हैं। सराहनीय सेवा के लिए मेडल पाने वाले 746 कर्मी हैं। 95

लोगों को वीरता पदक दिया गया। इनमें 5 नाम ऐसे हैं जिन्हें मरणोपरांत सम्मानित किया गया।

इनमें जेके पुलिस के डिप्टी एसपी हुमायूं मुजमिल, हेड कॉन्स्टेबल गिरजेश कुमार उद्दे, कॉन्स्टेबल सुनील कुमार पांडे, हेड कॉन्स्टेबल रवि शर्मा और सिलेक्शन ग्रेड फायरमैन सतीश कुमार रैना शामिल हैं।

मुंबई हमले का दोषी तहव्वुर राणा लाया जाएगा भारत

अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट से प्रत्यर्पण की मंजूरी, हेडली के साथ अटैक का बनाया था प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई हमले (26/11) के दोषी तहव्वुर राणा को जल्द भारत लाया जाएगा। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने भारत-अमेरिका प्रत्यर्पण संधि के तहत राणा के प्रत्यर्पण को मंजूरी दे दी है। तहव्वुर राणा को 2009 में एफबीआई ने गिरफ्तार किया था। 13 नवंबर 2024 को राणा ने निचली अदालत के

प्रत्यर्पण के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने 21 जनवरी को खारिज कर दिया था।

राणा के पास प्रत्यर्पण से बचने का ये आखिरी मौका था। इससे पहले उसने सैन फ्रांसिस्को की एक अदालत में अपील की थी, जहां उसकी याचिका को खारिज कर दिया गया था। अमेरिकी अदालत ने अपने फैसले में कहा था कि दोनों देशों के बीच प्रत्यर्पण संधि के तहत उसे भारत भेजा जा सकता है। मुंबई हमले की 405 पन्नों की चार्जशीट में राणा का नाम भी आरोपी के तौर पर दर्ज है। इसके मुताबिक राणा आईएस और लश्कर-ए-तैयबा का मेंबर है। चार्जशीट के मुताबिक राणा हमले के मास्टरमाइंड मुख्य आरोपी डेविड कोलमैन हेडली की मदद कर रहा था। कोर्ट ने शुक्रवार को उसकी दोषसिद्धि के खिलाफ समीक्षा याचिका खारिज कर दी।

38 सुरंग, 927 पुल और भीषण ठंड में भी नहीं लगेगा ब्रेक

● कटरा-श्रीनगर वंदे भारत का हुआ सफल ट्रायल, लोग बोले जय मां भारती

जम्मू (एजेंसी)। भारतीय रेलवे ने शनिवार को श्री माता वैष्णो देवी कटरा और श्रीनगर रेलवे स्टेशनों के बीच पहली वंदे भारत ट्रेन का ट्रायल रन किया। यह ट्रेन प्रतिष्ठित अंजी खाद ब्रिज और चेनाब ब्रिज से गुजरी तो लोगों ने भारत माता के जयकारे लगाए। अंजी खाद ब्रिज भारत का पहला केबल-स्टेड रेलवे ब्रिज है, जबकि चेनाब ब्रिज दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे ब्रिज है। कश्मीर घाटी की कठोर जलवायु को ध्यान में रखते हुए, यह अनूठी वंदे भारत ट्रेन इस क्षेत्र को भारत के लीडिंग सेमी-हाई-स्पीड रेल नेटवर्क से जोड़ने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगी। नई सेवा से कनेक्टिविटी में सुधार होगा, पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, और तीर्थयात्रियों, पर्यटकों और स्थानीय निवासियों के लिए यात्रा की सुविधा में वृद्धि होगी। कटरा से श्रीनगर के बीच की दूरी 203 किमी है, और इस रास्ते में ट्रेन 38 सुरंगों और 927 पुलों से होकर गुजरेगी। सबसे लंबी सुरंग टी-50 है, जो 12.8 किमी लंबी है। पुलों की कुल लंबाई करीब 13 किमी और टनल की कुल लंबाई 119 किमी है, यानी इस रूट का आधा हिस्सा टनल से होकर गुजरता है। यह सेमी हाईस्पीड ट्रेन 70 से 75 किमी प्रति घंटा की रफ्तार से चलेगी। दोनों शहरों के बीच सात स्टेशन होंगे- रियासी, सवालकोट, संगलदान, रामबन, बनिहाल, काजीगुंज और बिजबेहरा। वंदे भारत एक्सप्रेस हफ्ते में छह दिन संचालित होगी और 203 किमी का सफर तीन घंटे 10 मिनट में पूरा करेगी। इस साल फरवरी में वाणिज्यिक परिचालन शुरू होने की संभावना है, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा पहले सप्ताह के दौरान उद्घाटन की उम्मीद जताई जा रही है।

रेलवे बोर्ड अभी भी सटीक तारीख और समय को अंतिम रूप दे रहा है। कटरा-श्रीनगर वंदे भारत ट्रेन के टिकट की कीमतों की पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन अनुमान है कि एसी चेयर कार का किराया लगभग 1,500-1,600 रुपये हो सकता है, जबकि एग्जीक्यूटिव चेयर कार का किराया 2,200-2,500 रुपये तक हो सकता है।

जन्मजात नागरिकता कानून पर ट्रंप की राह नहीं आसान

लंबी कानूनी लड़ाई में उलझना तय, फैसले से डरे भारतीय

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रंप ने देश में जन्म के आधार पर स्वतः नागरिकता मिलने के कानून में बदलाव कर जहां अमेरिका में बसे लाखों भारतीयों समेत दूसरे मुल्कों से आए अस्थायी प्रवासियों के लिए खतरे की घंटी बजा दी है, वहीं इसका लंबी कानूनी लड़ाई में उलझना भी तय हो गया है। हालांकि अमेरिका के फेडरल कोर्ट ने ट्रंप के इस आदेश को असंवैधानिक बताते हुए इसके अमल पर 14 दिनों तक के लिए रोक लगा दी है लेकिन वॉइट हाउस की ओर से इस कानूनी लड़ाई से पुरजोर तरीके से निबटने का बयान इस बात का इशारा कर रहा है कि यह जंग लंबी खिंचने वाली है और कोई फैसला आने तक आप्रवासियों की सांसें अटकी रहेंगी।

शारदा सिन्हा समेत सात को पद्म विभूषण, 19 पद्म भूषण और 113 पद्मश्री का भी ऐलान

पटना। राष्ट्रपति ने 2025 के पद्म पुरस्कारों की घोषणा गणतंत्र दिवस पर कीं हैं। इस साल कुल 139 लोगों को यह सम्मान मिलेगा। इनमें 7 पद्म विभूषण, 19 पद्म भूषण और 113 पद्मश्री शामिल है। ये पुरस्कार कला, समाजसेवा, सार्वजनिक जीवन, विज्ञान, उद्योग, चिकित्सा, साहित्य, शिक्षा, खेल और नागरिक सेवा जैसे कई क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान के लिए दिए जाते हैं। इन पुरस्कारों में 23 महिलाएं, 10 विदेशी/एनआरआई/पीआईओ/ओसीआई और 13 मरणोपरांत शामिल हैं। बिहार के सात हस्तियों को भी पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

पद्म पुरस्कारों की घोषणा-पद्म पुरस्कार भारत के सबसे बड़े नागरिक सम्मानों में से एक हैं। ये पुरस्कार तीन श्रेणियों में दिए जाते हैं- पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री। 'पद्म विभूषण' असाधारण और विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया जाता है।

अमित शाह ने संकल्प पत्र का पार्ट-3 किया लॉन्च

बोले-केजरीवाल जैसा झूठ बोलने वाला नहीं देखा उन्हें कुंभ में डुबकी लगानी चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली में पार्टी के संकल्प पत्र का तीसरा हिस्सा जारी किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि मैंने केजरीवाल जैसा झूठा इंसान अपने पूरे जीवन में नहीं देखा है। अभी कुंभ लगा है, केजरीवाल डुबकी लगा लो तो झूठ बोलने के पाप कट जाएंगे।

अमित शाह ने कहा कि केजरीवाल ने दिल्ली में कई घोटाले किए। उन्होंने स्कूलों और मंदिरों, गुरुद्वारों को नहीं बख्शा। सबके ठेके दे दिए, हजारों करोड़ का घोटाला किया। यमुना को शुद्ध करने का वादा किया था, लेकिन 7 साल में भी पूरा नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि हम चुनाव को बहुत गंभीरता से लेते हैं। बीजेपी कोरे वादे नहीं करती है। एक लाख आठ हजार लोगों ने अपना सुझाव दिया। 62 प्रकार के समूहों की बैठक की गई।

गणतंत्र दिवस पर रात में सड़कों पर उतरी इंदौर पुलिस

होटल-लॉज चेक, 560 पर कार्रवाई, शराब पीकर गाड़ी चलाने वालों पर भी शिकंजा

इंदौर (नप्र)। गणतंत्र दिवस को लेकर सुरक्षा कड़ी करते हुए इंदौर पुलिस ने सड़कों पर विशेष अभियान चलाया। पुलिस ने रातभर जगह-जगह चेकिंग की और होटल-लॉज समेत संवेदनशील इलाकों में कॉम्बिंग गश्त की। इस दौरान 1294 संदिग्धों की जांच की गई, जिनमें से 560 पर वैधानिक कार्रवाई की गई। शराब पीकर वाहन चलाने वालों और यातायात नियम तोड़ने वालों पर भी सख्ती बरती गई। पुलिस ने 171 लापरवाह वाहन चालकों पर जुर्माना लगाया। इंदौर में सुरक्षा को लेकर पुलिस ने चौकसी बढ़ा दी है। 24-25 जनवरी की रात से सुबह तक चारों जोन और ट्रैफिक डीसीपी के नेतृत्व में शहर के सभी थाना क्षेत्रों में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और थाना प्रभारियों ने पुलिस फोर्स के साथ कॉम्बिंग गश्त की।

गणतंत्र दिवस से पहले इंदौर पुलिस का अभियान, 560 बदमाशों पर कार्रवाई

* पुलिस ने 24-25 जनवरी की रात सुरक्षा बढ़ाने के लिए शहरभर में कॉम्बिंग गश्त की।
* 1294 बदमाशों की जांच की और उनमें से 560 पर वैधानिक कार्रवाई की।
* 279 से ज्यादा वारंट तामील किए, जिनमें 47 स्थायी, 89 गिरफ्तारी और 143 जमानती वारंट शामिल हैं।
* 171 लापरवाह वाहन चालकों पर कार्रवाई की, जो शराब पीकर गाड़ी चला रहे थे।
* 301 गुंडे-बदमाश, 84 नकबजन, 41 लुटेरे, 105 चाकूबाज, 16 ड्रग्स पैडलर और 152 निगरानीशुदा बदमाशों सहित 734 अपराधियों को चेतावनी दी गई।
* पुलिस ने अपराधियों से डोजियर भरवाकर भविष्य में अपराध न करने की हिदायत दी।

इंदौर से भुवनेश्वर के लिए 7 फरवरी से सीधी उड़ान

इंडिगो की नई सेवा, सप्ताह में चार दिन जाएगी, जगन्नाथपुरी की यात्रा होगी आसान

इंदौर (नप्र)। इंदौर एयरपोर्ट से नए साल में एक और सीधी उड़ान की शुरुआत होने जा रही है। 7 फरवरी से इंडिगो एयरलाइंस इंदौर से भुवनेश्वर के लिए डायरेक्ट फ्लाइट शुरू करेगी। यह उड़ान इंदौर को उड़ीसा से सीधे जोड़ेगी, जिससे व्यापार और पर्यटन दोनों को फायदा होगा। इस उड़ान का सबसे बड़ा फायदा जगन्नाथ पुरी जाने वाले श्रद्धालुओं को मिलेगा। इसके अलावा, भुवनेश्वर पूर्वी भारत का एक प्रमुख व्यवसायिक केंद्र है, जिससे व्यापार के लिहाज से यह फ्लाइट महत्वपूर्ण साबित होगी। ट्रैवल एजेंट्स के मुताबिक, यह इंदौर से ओडिशा को जोड़ने वाली पहली सीधी उड़ान होगी। इससे न केवल भुवनेश्वर बल्कि ओडिशा के अन्य शहरों तक पहुंचने में यात्रियों को सुविधा होगी। इंडिगो एयरलाइंस नए साल में भुवनेश्वर एयरपोर्ट से पांच नई उड़ानें शुरू करने जा रही है, इनमें इंदौर से भुवनेश्वर की सीधी उड़ान भी शामिल है, जो दोनों शहरों के बीच कनेक्टिविटी को मजबूत करेगी।

भुवनेश्वर से डेढ़ घंटे में पहुंच सकते हैं जगन्नाथपुरी- इंदौर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु जगन्नाथपुरी जाते हैं, जिसे चार धामों में से एक प्रमुख धाम माना जाता है। यह हिंदुओं की आस्था का महत्वपूर्ण केंद्र है। भुवनेश्वर से मात्र 60 किलोमीटर दूर स्थित जगन्नाथपुरी के सबसे नजदीक का एयरपोर्ट भुवनेश्वर ही है। नई फ्लाइट शुरू होने से श्रद्धालु इंदौर से भुवनेश्वर तक हवाई यात्रा करके मात्र एक से डेढ़ घंटे में सड़क मार्ग से जगन्नाथपुरी पहुंच सकते हैं। जगन्नाथपुरी का रथयात्रा उत्सवपुरी का सबसे बड़ा उत्सव रथयात्रा है, जो हर साल बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। 2025 में यह रथयात्रा 27 जून को आयोजित होगी। नई फ्लाइट से इस उत्सव में भाग लेने वाले श्रद्धालुओं को यात्रा में बड़ी सुविधा मिलेगी।

यह रहेगा शेड्यूल

* सोमवार, बुधवार, शुक्रवार और रविवार को भुवनेश्वर से सुबह 11.35 पर रवाना होकर दोपहर 1.30 पर इंदौर पहुंचेगी।
* सोमवार, शुक्रवार और रविवार को शाम 7.45 पर इंदौर से रवाना होकर रात 9.35 पर भुवनेश्वर पहुंचेगी।
* बुधवार को यह फ्लाइट दोपहर दो बजे इंदौर से रवाना होकर दोपहर 3.50 पर भुवनेश्वर पहुंचेगी।

जनवरी में शुरू हो सकती है फ्लाइट

ट्रेवल एजेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के सचिव अमोल कटारिया ने बताया कि इंदौर से भुवनेश्वर के लिए सीधी उड़ान की लंबे समय से मांग की जा रही थी। अब तक भुवनेश्वर या जगन्नाथपुरी जाने के लिए यात्रियों को इंदौर से हैदराबाद या दिल्ली होकर भुवनेश्वर की फ्लाइट लेनी पड़ती थी। नई सीधी फ्लाइट शुरू होने से यात्रियों का समय और पैसा दोनों बचेंगे। कटारिया ने कहा कि यह फ्लाइट इंदौर का पूर्वी भारत से मजबूत कनेक्शन बनाएगी।

इंदौर में ठण्ड का दौर फिर शुरू

उत्तर पूर्वी हवाओं से 4 डिग्री गिरा दिन का पारा, रात में भी बढ़ा असर

इंदौर (नप्र)। इंदौर में दो दिनों से ठण्ड का असर तेज होने लगा है। उत्तर से आ रही बर्फीली हवाओं के कारण तापमान में गिरावट आ रही है। शुक्रवार को दिन के तापमान में 4 डिग्री की गिरावट आई और 23.4 (-3) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। रात के तापमान में भी 1 डिग्री की गिरावट आई 12.6 (+2) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक अगले दो-तीन दिनों में तापमान में गिरावट बनी रहेगी। साथ ही ठण्ड का असर तेज होगा। दरअसल गुरुवार रात से हवा का रुख उत्तरी हो गया है। शुक्रवार को इंदौर में हवा की रफ्तार काफी तेज रही। वहीं, उत्तर भारत में जेट स्ट्रीम हवा 12.6 किमी की ऊंचाई पर 232 किमी प्रतिघंटा तक चली। इससे ठिठुरन बढ़ गई और दिन और रात के तापमान में गिरावट आई। मौसम वैज्ञानिक वीएस यादव के मुताबिक अगले 3 दिनों तक ऐसा ही मौसम रहेगा। इस दौरान दिन के साथ रात के तापमान में भी गिरावट होगी। इससे पहले दक्षिण-पूर्वी हवाओं ने प्रदेश से ठंड जैसे गायब कर दी थी।

29 जनवरी से बदलेगा मौसम- मौसम विभाग के अनुसार अगले 3 दिन तक ठंड का असर रहेगा। इसके बाद थोड़ी राहत मिलेगी। 29 जनवरी से पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र में एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव हो रहा है। इससे पारे में बढ़ोतरी होगी। सिस्टम गुजरने के बाद फिर से ठंड बढ़ जाएगी।

एप्पल कंपनी की लाखों की एसेसरीज पकड़ी

असली बताकर नकली बेच रहे थे, अहमदाबाद की कंपनी ने पुलिस के साथ डाली रेड

इंदौर (नप्र)। इंदौर के भंवरकुआ इलाके में अहमदाबाद की एक कंपनी ने पांच बड़े मोबाइल शॉप पर छापा मारा, जो एप्पल कंपनी के नकली प्रोडक्ट्स को असली बताकर बेच रहे थे। इन शॉप्स से लाखों रुपए की सैकड़ों एसेसरीज बरामद की गईं। इस कार्रवाई में कंपनी और पुलिस की टीम ने मिलकर रेड की थी। भंवरकुआ पुलिस के अनुसार, विशाल जडेजा, निवासी मधुकुंज सोसाइटी, गुजरात की शिकायत पर पुलिस ने अमित बागजई, उत्तमसिंह चौहान, किशन पंजवानी, रितीक वाधवानी और निकेश गौतम के खिलाफ कॉपीराइट एक्ट के तहत केस दर्ज किया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। विशाल जडेजा ने बताया कि वह 'ग्रिफिन एनटेलीएक्चुअर प्रॉपर्ट्री' नामक कंपनी में मैनेजर हैं, जो एप्पल के लिए अधिकृत है और नकली एसेसरीज की पकड़-धकड़ का काम करती है। विशाल को जानकारी मिली थी कि भोलाराम मार्ग, जो एजुकेशन हब के रूप में जाना जाता है, वहां पर 5 शॉप्स में नकली एसेसरीज बेची जा रही थीं। पहले अमित बागजई की शॉप पर छापा मारा गया, जहां से 206 मोबाइल कवर, मोबाइल एडाप्टर और डाटा केबल जब्त किए गए। इसके बाद उत्तम सिंह चौहान की दुकान से 170 मोबाइल कवर, इयर पार्ट्स और अन्य एसेसरीज जब्त की गईं। किशन पंजवानी की 'कल्याण कलेक्शन' से 290 मोबाइल कवर और ईयर बड्स बरामद हुए। रितीक वाधवानी की 'ए टू जेड कलेक्शन' से 157 मोबाइल कवर, 2 ईयर पार्ट्स, 1 डाटा केबल और ईयर बड्स जब्त किए गए। अंत में, निकेश गौतम की शॉप से 126 मोबाइल कवर, 4 एडाप्टर और 6 डाटा केबल जब्त किए गए। सभी शॉप मालिकों को थाने लाकर उनके खिलाफ कॉपीराइट एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है।

मां ने बेटे को 7 साल बेड़ियों से जकड़कर रखा

एनजीओ ने छुड़ाकर मेंटल हॉस्पिटल भेजा, महिला बोली- किसी ने जादू-टोना किया

इंदौर (नप्र)। इंदौर में 30 वर्षीय युवक को 7 साल तक बेड़ियों में जकड़ कर रखा गया। वजह उसका मानसिक संतुलन ठीक न होना है। इतने सालों में हर मौसम चाहे सर्दी हो या गर्मी या फिर बरसात, वह ऐसे ही बेड़ियों में बंधा रहा। चौंकाने वाली बात है कि यह सब थाने से 100 मीटर की दूरी पर हो रहा था लेकिन पुलिस, समाज, राहगीर और रहवासी इसे नजरअंदाज करते रहे। सूचना मिलने के बाद इंदौर के एक एनजीओ ने नजर रखी और शुक्रवार को उसका रेस्क्यू किया। इस दौरान रेस्क्यू टीम और पुलिस को काफी मशक्कत करनी पड़ी। उसकी मां को पैनिक अटैक आने लगे। वह काफी हिंसक हो गई। उसे बार-बार टीम की महिलाओं ने रोका तो उसने खूब झूमा-झटकी, बदसलूकी और हंगामा किया। इस बीच टीम ने महिला से बेड़ियों की चाबी छीनी और तालों को खोलने की कोशिश की गई, लेकिन जंग के कारण नहीं खुले। इसके बाद हाथ-पैर की बेड़ियों को छेनी-हथौड़े से तोड़ा गया। 2 घंटे चले रेस्क्यू के बाद युवक को छुड़ाकर इलाज के लिए मेंटल हॉस्पिटल भेजा गया है। दरअसल, शहर को भिक्षुकों से मुक्त करने का अभियान चल रहा है। जिसके तहत संस्था 'प्रवेश' भिक्षुकों का रेस्क्यू कर रही है। इसी दौरान युवक के बंधे होने की सूचना मिली। तस्दीक होने के बाद उसका रेस्क्यू किया गया।

पुराने ठेले से बेड़ियों से बांधकर रखा था

प्रवेश संस्था की अध्यक्ष रुपाली जैन को पिछले दिनों सूचना मिली थी कि खजराना थाने के सामने 30 वर्षीय युवक को कई सालों से बेड़ियों में बांधकर रखा गया है। टीम ने तस्दीक की तो पता चला कि युवक को मस्जिद के बाहर एक पुराने ठेले से बेड़ियों से बांधकर रखा है। उसके आसपास प्लास्टिक की शीट बांधी गई है। उसने सिर्फ एक तौलिया लपेट रखा था। लोगों ने युवक का नाम जैद अली और उसकी मां का नाम मुमताज बताया। मां रोज भीख मांगने जाती है। वह रोज यहां आती है। बेड़ियों के तालों की चाबियां उसके पास ही हैं। कभी वह उसे खाना-पीना देती है तो कभी नहीं देती। लोगों ने ये भी बताया कि युवक का मानसिक संतुलन ठीक नहीं है। मां भी काफी हिंसक प्रवृत्ति की है। आसपास के ठेले वालों के मुताबिक युवक भूख लगने पर चिल्लाता है तो कभी शांत रहता है। उसकी हालत देख कई बार ठेले वाले, राहगीर उसे फल, पानी या भोजन दे देते हैं।

गंदगी फैली थी, मक्खियां भिनभिना रहीं थी

संस्था की टीम मौके पर पहुंची और पास जाकर देखा तो पता चला कि युवक के दोनों पैर मोटी बेड़ियों के साथ बंधे थे। बेड़ियों का दूसरा छोर दो सिरों पर सब्बल गाड़कर उसमें दो ताले लगा दिए थे। ऐसे ही दोनों कलाइयां भी मोटी बेड़ियों के साथ बड़े ताले में जकड़ी थी। इसका छोर हाथ ठेले से बंधा हुआ था। युवक के आसपास काफी गंदगी थी, जिससे मक्खियां भिनभिना रहीं थी। खास बात यह कि वह जहां बंधा था वह खजराना थाने की मुख्य सड़क है। रोजाना यहां से हजारों लोग गुजरते हैं। मस्जिद होने के कारण यहां काफी आवाजाही रहती है। लोगों ने बताया युवक करीब तीन साल से बाहर बंधा है। इसके पहले उसे अंदर मस्जिद के पास बांधकर रखा था।

युवक बोला- मुझे 7 साल से मां ने बांधकर रखा

रेस्क्यू के दौरान युवक कभी ठीक से बात करता तो कभी बड़बड़ाने लगता। उसने कहा कि मुझे सात साल से मां ने बांधकर रखा है। कुछ देर बाद वह किसी और का नाम लेने लगा। इधर, पुलिसकर्मियों ने महिला को समझाइश देने की कोशिश की तो उसने वहां जुटी भीड़ से कहा कि समाजजन साथ दो। यह मेरे साथ क्या हो रहा है? आप लोग साथ नहीं देंगे तो कौन देगा। इस बीच कुछ लोगों ने बताया कि महिला यूं तो अच्छी रहती है, लेकिन जैसे ही कोई बेटे को छुड़ाने की बात करता है वह हिंसक हो जाती है। टीम ने महिला से बेड़ियां खोलने के लिए चाबी मांगी तो उसने मना कर दिया और भागने लगी। फिर उससे जबर्दस्ती थैली लेकर चाबियां ली। इस दौरान पुलिस और टीम के लोगों ने युवक के आसपास घेरा बनाया। फिर गंदा गमछा निकालकर उसे पेंट पहनाने की कोशिश की, लेकिन बेड़ियों के कारण काफी परेशानी हुई। ताले भी खोलने की कोशिश की लेकिन कई साल होने के कारण वह खराब हो गए थे और नहीं खुले।

मां बोली- मेरे बेटे को ऐसे नहीं ले जा सकते

टीम जैसे ही युवक को छुड़ाने आगे बढ़ी तो उसकी मां हिंसक हो गई। उसने खूब हंगामा किया और कहा कि आप मेरे बेटे को ऐसे नहीं ले जा सकते। उसने रुपाली जैन, टीम की महिला सदस्यों से झूमाझटकी की। हालत यह हो गई कि वह बेकाबू हो गई। उसे कई लोगों ने समझाने की कोशिश की आपका बेटा ठीक होने जा रहा है, लेकिन वह हंगामा करने लगी। ऐसी स्थिति कई बार बनी। मां का कहना है कि बेटे पर किसी ने जादू-टोना किया है। वह भीख मांगकर खुद का गुजारा करती है और बेटे को भी संभालती है।

दो घंटों में छेनी-हथौड़ा से काटी बेड़ियां

कुछ देर बाद लोगों ने टीम को छेनी और बड़ा हथौड़ा लाकर दिया। तब तक टीम ने उसकी बेड़ियों को उखाड़ा, यह जमीन में सब्बलों के साथ गड़ी थी। फिर दोनों पैरों की बेड़ियां छेनी-हथौड़े से काटी। इस तरह उसके दोनों हाथ-पैर आधी बेड़ियों से मुक्त किए। फिर बेड़ियों को काटा। इसके बाद जैद को पैंट-टी शर्ट पहनाई और एम्बुलेंस में बैठाकर सरकारी मेंटल हॉस्पिटल ले जाया गया। उधर, उसकी मां ने फिर हंगामा मचाया और कुछ देर बाद शांत हो गई। टीम को उसकी थैली से चाबियां, 200 रुपए और कागज पर लिखा एक मोबाइल नंबर मिला है।

फेब्रीकेशन की दुकान पर कटवाई बेड़ियां

जब युवक को अस्पताल ले जाया गया तो उसके हाथ-पैर में कटी हुई बेड़ियां बंधी थी। स्टाफ ने इलाज में परेशान का हवाला दिया तो टीम उसे बाणगंगा क्षेत्र की एक फेब्रीकेशन की दुकान पर ले गई। यहां कटर से उसकी बेड़ियां काटकर अलग की गईं। जैसे ही बेड़ियां कटी युवक खुश हो गया और टीम के सदस्यों से हाथ मिलाया। अभी वह मेंटल हॉस्पिटल में एडमिट है। स्थानीय रहवासी शाहरुख ने बताया कि युवक की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। वह लोगों को पत्थर मारता है, महिलाओं को गालियां देता है।

महू खेल महोत्सव में हिस्सा ले रहे 8 स्कूल

100 मीटर दौड़ और कबड्डी में इंदौर की ब्लॉसम अकादमी ने दिखाया दम, कई टीमें सेमीफाइनल में पहुंचीं

इंदौर (नप्र)। महू में आयोजित खेल महोत्सव में शुक्रवार को आठ प्रमुख स्कूलों ने हिस्सा लिया, जिसमें एथलेटिक्स, फुटबॉल और कबड्डी सहित विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इस प्रतिस्पर्धा में ब्लॉसम अकादमी, प्रतिभा विद्या विहार, महू आर्मी स्कूल, महू सीएम राइस, वैल वैदर हॉयर सेकंडरी स्कूल, ग्लोरियस मानपुर, सेंट मेरी हायर सेकेंडरी स्कूल और शासकीय बालक उमा विद्यालय महू ने भाग लिया।

100 मीटर दौड़ में वैल वैदर इंटरनेशनल स्कूल के अक्षत पाटीदार ने पहला, क्लोड पब्लिक स्कूल के वैभव पटवारी ने दूसरा और ब्लॉसम अकादमी के कक्षा 5वीं के छात्र अंश पाल ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। कबड्डी अंडर-15 में ब्लॉसम अकादमी (ए) टीम ने आर्मी स्कूल महू को हराया। लड़कियों के वर्ग में प्रतिभा विद्या विहार, इंदौर की टीम ने बिग ड्रीम, महू को हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई।

महापौर को गणेश बाबा अवॉर्ड

नन्हीं रेसलर्स के बीच जाकर बोले- ओलंपिक की तैयारी बचपन से ही करें

इंदौर (नप्र)। इंदौर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव को गणेश बाबा अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें ताराचंद दादा बालिका रेसलिंग सेंटर पर दिया गया। रमेश मिस्त्री पहलवान ने बताया कि बालिका दिवस के मौके पर महापौर के साथ एमआईसी सदस्य नंदकिशोर पहाड़िया को भी सम्मानित किया। यहां संबोधित करते हुए महापौर भार्गव ने कहा कि आप अपने लक्ष्य को केंद्र बिंदु बनाकर परिश्रम करते चलते जाओ तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी। रेसलिंग अभ्यास कर रही बालिकाओं की तकनीक देखकर ओलिंपिक का पौधा तैयार हो रहा है। बचपन से ही ओलिंपिक की तैयारी करेंगे तो जरूर सफलता मिलेगी। इंदौर के कसेरा बाजार निकेतन में अध्ययनरत देविका पाल (मिस्त्री) की रेसलिंग, शस्त्र कला तकनीक को देखकर काफी उत्साहित हुए। सेंटर के अध्यक्ष कमल वर्मा, संचालक नरेश वर्मा, मुन्ना पहलवान, उस्ताद महेश वर्मा, बच्चू पहलवान, सचिव मुकेश वर्मा, खलीफा संतोष कुशवाहा, विशाल मकवाना, सीमा राठौर, निर्मल वर्मा, पवन वर्मा ने स्वागत किया।

डेवलपमेंट फाउंडेशन का कार्यक्रम

इंदौर-धार रेल लाइन इस साल के अंत तक शुरू होने की उम्मीद, 18 हजार करोड़ की परियोजना

इंदौर (नप्र)। मालवा क्षेत्र के विकास में रेल कनेक्टिविटी की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए डेवलपमेंट फाउंडेशन की पत्रिका 'वार्ता' के विमोचन समारोह में विशेषज्ञों ने चिंता जताई। पीथमपुर औद्योगिक संगठन के अध्यक्ष डॉ. गौतम कोठारी ने बताया कि आजादी के बाद से मालवा को कोई नई रेल लाइन नहीं मिली। उल्टे, मौजूदा मीटर गेज लाइन भी बंद कर दी गई। हालांकि, अब इंदौर-दाहोद-छोटा उदयपुर लाइन के निर्माण में तेजी आई है। इंदौर-दाहोद रेल लाइन परियोजना की लागत 1,033 करोड़ से बढ़कर 18,000 करोड़ रुपये हो गई है। डॉ. कोठारी ने आशा व्यक्त की कि वर्ष के अंत तक इंदौर से धार तक रेल सेवा शुरू हो जाएगी।

विकास के लिए जागरूक होना आवश्यक- कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति डॉ. निशा दुबे ने कहा कि शहर और समाज के विकास के लिए प्रबुद्ध नागरिकों का जागरूक होना आवश्यक है। प्रो. पी.के. चांदे ने तकनीकी विकास पर जोर देते हुए कहा कि एआई जैसी नई तकनीकों का उपयोग विकास कार्यों में किया जाना चाहिए। उन्होंने ई-वोटिंग के माध्यम से चुनावों को सरल और किफायती बनाने का सुझाव दिया।

नई शिक्षा नीति में बड़ी असमानता

पूर्व कुलपति डॉ. उमराव सिंह चौधरी ने कहा की नई शिक्षा नीति में, समता मूलक समाज की बातें कही गई थीं किंतु नई शिक्षा नीति में बड़ी असमानता है ,देश में क्षेत्रीय असंतुलन है , गांव एवं शहरों की व्यवस्थाएं भी अलग-अलग हैं जिस पर ध्यान नहीं दिया गया है, जिसके कारण गांवों की बुरी हालत है, न उचित शिक्षा मिल रही है,न ही जरूरी स्वास्थ्य सेवाएं दे पा रहे हैं।स्त्री पुरुष के बीच भी अवसर की असमानता है, अतः सबसे पहले समावेशन पर ध्यान देने की जरूरत है। इस मौके पर शिक्षाविद डॉ. एस एल गर्ग, कंचन तारे, आभा जौहरी, सेवानिवृत्त सी सी एफ ए के जोशी, सईद अख्तर, प्रो अशद खान, पर्यावरणविद् डॉ. ओ पी जोशी, सुरेश उपाध्याय आदि ने भी संबोधित किया। प्रारंभ में डेवलपमेंट फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी आलोक खरे ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में रामेश्वर गुप्ता, ओपी श्रीवास्तव, मोहम्मद शाहिद खान, शफी शेख, प्रणिता दीक्षित, प्राची परिहार एवं प्राची सिंह आदि भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्याम पांडे ने किया।

कला मनीषी सुरेश तांतेड़

विनोद नागर

लेखक साहित्यकार हैं।

अभिनव कला के मधुबन में भँवरे ने खिलाये फूल

भोपाल में साहित्य, कला और संस्कृति की आकाशगंगा के जगमगाते सितारों के बीच उन्हें खोजने के लिए आपको किसी टेलिस्कोप की जरुरत नहीं पड़ेगी। कला जगत में इस सृजनात्मक सितारे का आभा मंडल इतना चमकदार है कि बरबस ही आँखें उन्हें सहज भाव से ढूँढ लेती हैं। जी हाँ, यहाँ बात हो रही है कलाओं के विविध स्वरुप को हर साँस के साथ जीने वाले उस शख्स की जिसने अपनी ज़िन्दगी के बेहतरीन साठ साल कलाओं के मधुबन में गुनगुनाते भँवरे की मानिंद गुजार दिये। आप चाहें तो उसे इस मधुबन का बागबान भी कह सकते हैं, जिसने क्यारियों में रंग-बिरंगे असंख्य फूल खिलाने की कभी कोई तनख्वाह नहीं ली।

80 वर्षीय पं. सुरेश ताँतेड़ ने गायन-वादन की अभिरुचि के चलते 1960 के दशक में पहले अभिनव कला परिषद् की तथा 1970 में मधुबन की स्थापना की। इन संस्थाओं द्वारा आयोजित शास्त्रीय नृत्य, गीत-संगीत के कार्यक्रम न केवल बेहद लोकप्रिय हुए बल्कि इन आयोजनों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा अर्जित की है। शास्त्रीय संगीत का शायद ही कोई ऐसा कलाकार हो, जिसने अभिनव कला परिषद् के प्रतिष्ठित मंच पर प्रस्तुति देकर अपना और अपनी कला का मान न बढ़ाया हो।

शास्त्रीय संगीत की महफ़िल सजाने का जुनून– चाहे वे पं. जसराज हों या भीमसेन जोशी.. गिरिजा देवी हों या किशोरी अमोनकर.. कुमार गन्धर्व हों या बाला साहब पूंछवाले.. गोस्वामी गोकुलोत्सव महाराज हों या नारायण राव व्यास.. जितेन्द्र अभिषेकी हों या शोभा गुर्टू.. परवीन सुल्ताना और दिलशाद खाँ हों अथवा उस्ताद नसीर अहमद खाँ.. पुरुषोत्तमदास जलोटा और उनके सुपुत्र अनूप जलोटा से लेकर राजन साजन मिश्र की जोड़ी हो या उमाकांत रमाकांत गुंदेचा की ध्रुपद गायकी.. हर दौर में अभिनव कला परिषद् की संगीत सभाओं में रसिक श्रोताओं ने उन्हें बड़े चाव से सुना।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के महान सितारों- उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ (शहनाई) पं. रवि शंकर, उस्ताद हलीम ज़ाफर खान, उस्ताद विलायत खान (सितार) पं. हरिप्रसाद चौरसिया, रोनू मजूमदार (बाँसुरी) वी.जी. जोग, डॉ. एन. राजम (वायलिन) उस्ताद जाकिर हुसैन (तबला) पं. शिवकुमार शर्मा, ओमप्रकाश चौरसिया, भजन सोपोरी, तरुण भट्टाचार्य (संतूर) पं. विश्व मोहन भट्ट, सलिल भट्ट, ब्रज भूषण काबरा (मोहन वीणा) डॉ. अली अकबर खाँ, उस्ताद अमज़द अली खाँ, शरण रानी, रहमत अली खाँ (सरोद) की अनमोल स्वर लहरियों ने अभिनव कला परिषद् के मंच को नई ऊंचाई दी। आप नाम लेते जाइये, कोई नहीं छूटा, जिसने इस मंच पर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा से प्रेक्षकों को सम्मोहित न किया हो।

अभिनव कला परिषद् के मंच पर सजी गीत-ग़ज़ल की महफ़िल में शीर्ष ग़ज़ल गायकों- बेगम अख्तर, तलत महमूद और शोभा गुर्टू से लेकर राजेंद्र मेहता- नीना मेहता, जगजीत सिंह- चित्रा सिंह, पंकज उधास, ए. हरिहरन, अनूप ज़लोटा, पीनाज मसानी, तलत अज़ीज़, चन्दन दास, राजकुमार-इन्द्राणी रिज़्वी, अहमद हुसैन- मोहम्मद हुसैन तक.. और पार्श्व गायकों में महेंद्र कपूर, सुधा मल्होत्रा, कृष्णा कल्ले, अनुराधा पौडवाल, सुषमा श्रेष्ठ से लेकर उदित नारायण, अलका याग्निक, कविता कृष्णमूर्ति, रूपकुमार राठौड़, सारिका सिंह तक.. सभी ने शाम-ए-ग़ज़ल का खूब समां बाँधा।

शास्त्रीय नृत्य के आयोजनों में सितारा देवी, बिरजू महाराज, गोपी कृष्ण, लीला सेमसन, पुरु दाधीच से लेकर शाश्वती सेन, कमलिनी- नलिनी, जयंती माला- प्रियमाला, शाम्भवी शुक्ला ने परिषद् के मंच को सुशोभित किया है। मालिनी अवस्थी और प्रहलादसिंह टिपाणीया सरीखे लोक गीतों के शीर्ष कलाकारों ने भी अपनी प्रस्तुतियों से लोकरंजन को सींचा है। आप नाम गिनते-गिनते थक जाएँगे, पर सूची आधी-अधूरी रहेगी।

पिछले 60 साल से परिषद् अपने सीमित साधनों और जन सहयोग से राजधानी में हर वर्ष चार त्रैमासिक संगीत समारोह 'उत्सव गणतंत्र' 'वसंत उत्सव' 'बरखा महोत्सव' और 'युवा खोज' निरंतर आयोजित करती आई है। अभी तक 400 से अधिक समारोह सफलतापूर्वक आयोजित किये जा चुके हैं, जिनमें 4 हजार से अधिक कलाकारों को अपनी प्रस्तुतियों से कला रसिकों का दिल जीतने का अवसर मिला है। परिषद् की संस्थागत सृजनात्मक यात्रा को मान्यता देते हुए मध्य प्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग ने वर्ष 2021 में 'राजा मानसिंह तोमर राष्ट्रीय सम्मान' से विभूषित कर गौरव बढ़ाया है।

परिषद् एक ओर जहाँ स्थापित नामचीन कलाकारों को 'अभिनव कला सम्मान' 'अभिनव संगीत रत्न' और 'अभिनव शब्द शिल्पी अलंकरण' जैसे सम्मान से नवाज़ती रही है, वहीं बाल एवं युवा प्रतिभाओं को 'कल के कलाकार' जैसा सम्मान प्रदान कर उनकी हौसला अफज़ाई करने में भी पीछे नहीं रही है। शास्त्रीय रागों पर आधारित राज्य स्तरीय युवा गायन प्रतियोगिता के विजेताओं को संस्था ने नकद पारितोषिक देने के बजाय तानपुरा, हारमोनियम और तबला जैसे वाद्य यंत्र पुरस्कार में देने का नवाचार अपनाया है।

'कल्याणजी आनंदजी' जैसी मशहूर फिल्म संगीतकार जोड़ी के आनंदजी भाई और सुप्रसिद्ध भजन गायक अनूप जलोटा भी संस्था से संरक्षक के रूप में जुड़े हुए हैं. दैनिक भास्कर समाचारपत्र समूह के अध्यक्ष (स्व.) रमेशचंद्र अग्रवाल, परमाली वालेस के सुभाष विठ्ठल दास और स्वदेश समाचारपत्र समूह के प्रमुख राजेन्द्र शर्मा की संरक्षक के बतौर मिली सरमायेदारी भी संस्था को खूब फली है। वर्षों तक मप्र लेखक संघ के अध्यक्ष रहे वरिष्ठ गीतकार डॉ.

रामवल्लभ आचार्य भी संस्था के सक्रिय सहयोगियों में रहे हैं। अखिल भारतीय कला मंदिर के संस्थापक पं. गौरीशंकर शर्मा 'गौरीश' और ख्यात छायाकार कमलेश जैमिनी सहित ढेर सारे जाने-पहचाने चेहरे आपको उनकी टीम के सक्रिय सदस्य के रूप में प्रायः हर आयोजन में नज़र आएँगे।

'मधुबन' अभिनव कला परिषद् की ही एक सहोदरी संस्था है, जो हर साल गुरु पूर्णिमा पर 'गुरु वंदना महोत्सव' आयोजित कर कला और साहित्य के क्षेत्र में गुरु शिष्य परंपरा का मान बढ़ाती रही है। इसमें कला, साहित्य, संस्कृति और पत्रकारिता क्षेत्र के मूर्धन्य हस्ताक्षरों को 'श्रेष्ठ कला आचार्य' सम्मान से विभूषित किया जाता है।

मंच से परे रहकर, मंच की रौनक बढ़ाने का जज्बा– अभिनव कला परिषद् भोपाल की उन उँगलियों पर गिनी जाने वाली साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं में अग्रणी है, जिसने नवाबों के शहर में भारतीय कला और संस्कृति को समृद्ध कर उसके संरक्षण और विकास में अहम् भूमिका निभाई है। जिस संस्था का अपना कोई संस्थागत भवन न हो और न ही सरकारी अनुदान या वित्तीय संसाधन जुटाने के कोई नियमित स्त्रोत हों; ऐसी संस्था केवल व्यापक जनाधार से एकत्र असीम विश्वास की पूंजी के बल पर ही छह दशक से अधिक समय तक अपना अस्तित्व बनाये रखने में कामयाब हो सकती है।

पं. सुरेश ताँतेड़ के कुशल नेतृत्व में परिषद् ने वाकई यह अनूठा काम कर दिखाया है। वर्ष भर वे इन कार्यक्रमों की तैयारियों में जुटे रहते हैं। सुनियोजित कार्य योजना ही इन विशाल आयोजनों को अपार ख्याति दिलाती रही है। कार्यक्रमों के दौरान वे स्वयं मंच पर अपनी उपस्थिति से अक्सर बचते है। उनका पूरा ध्यान मंच और मंचेतर व्यवस्थाओं पर बना रहता है। चश्में से झाँकती उनकी आँखें हर छोटी बड़ी गतिविधि पर पैनी नज़र रखती हैं। निमंत्रण पत्र हो या कार्यक्रम की मुद्रित विवरणिका; मंच की सजावट हो या दर्शकों की बैठक व्यवस्था; साउंड सिस्टम, हार-फूल और गुलदस्ते से लेकर फोटोग्राफी/ वीडियोग्राफी, जलपान, भोजन, आमंत्रित कलाकारों को लाने-ले जाने, उनके ठहरने की माकूल व्यवस्था का पूरा ख्याल वे संजीदगी से करते हैं।

अटलजी के सभा से लौटी भीड़ अनूप जलोटा को सुनने उमड़ी– स्मृतियों के झरोखे को खोलते ही पं. सुरेश ताँतेड़ की आँखों में चमक आ जाती है। वे पूरे मनोयोग से आपको यादों की बारात में साथ लिए चलते हैं- 'भोपाल में अनूप जलोटा का पहला कार्यक्रम हमने रवीन्द्र भवन परिसर में आयोजित किया था। संयोग से उसी दिन शाम को खिरनीवाला मैदान पर अटलजी (स्व. अटल बिहारी वाजपेयी) की आम सभा भी थी। जाहिर है अधिकांश लोगों की रूचि उस दिन अटलजी का भाषण सुनने में थी, अतः अनूप जलोटा को सुनने गिनती के लोग ही पहुंचे। आयोजक के रूप में हम असमंजस में थे कि श्रोताओं के अभाव में कार्यक्रम कैसे शुरू करें..?'

'..तभी मुझे एक युक्ति सूझी। मैंने आकाश साउंड सिस्टम वालों से (जिन्होंने दोनों जगह माइक और लाउड स्पीकर वगैरह की व्यवस्था की थी) कहा कि जैसे ही अटलजी का भाषण समाप्त हो वे रवीन्द्र भवन परिसर में लगे भोंगों (लाउड स्पीकर) का मुँह सड़क की ओर घुमा दें। यह युक्ति काम आई और अटलजी की आम सभा से लौट रही भीड़ हमारे कार्यक्रम में अनूप जलोटा को सुनने उमड़ पड़ी। हमारे लिये यह बड़े संतोष की बात थी। इसके दस पंद्रह दिन बाद ही अनूप जलोटा का विवाह हो गया, जिसमें हम भी शामिल हुए। उसने अपना हनीमून भोपाल में ही मनाया था..'

'1979 में हमने बीएचईएल के मुक्ताकाशी मंच पर एक अभिनव कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें पहली बार श्रोताओं को विश्व प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ और विख्यात वायलिन वादिका डॉ. (श्रीमती) एन. राजम द्वारा शहनाई और वायलिन वादन की जुगलबंदी सुनने का अद्भुत अवसर प्राप्त हुआ। इस आयोजन से प्राप्त सारी धनराशि हमने उस समय गुजरात में मोरवी के बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ दान कर दी थी..'

लताजी को भोपाल न ला पाने की कसक– यह पूछने पर कि अभिनव कला परिषद् की छह दशक की दास्ताँ में ऐसी कौन सी हसरत अधूरी रही जो लाख चाहने पर भी पूरी न हो सकी; वे तपाक से बताते हैं- 'लताजी (स्व. लता मंगेशकर) को भोपाल न ला पाने का अफ़सोस आज भी सालता है। हालाँकि कई बार उनसे बम्बई में उनके घर जाकर मिलने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। 'सुर सिंगार संसद' के कार्यक्रम में भी कई बार उनसे भेंट हुई। पर उन्हें भोपाल लाने में कामयाबी नहीं मिली..'

पैर छूते थे महेन्द्र कपूर– सुप्रसिद्ध पार्श्व गायक महेन्द्र कपूर से पं. सुरेश ताँतेड़ के आजीवन घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। वे बताते हैं- 'महेन्द्र कपूर से मेरा दिल का रिश्ता था। वे जब भी मिलते थे तो मेरे पैर छूते थे। उन्होंने हर बार हमारा निमंत्रण सहर्ष स्वीकार किया और एक महान गायक होने के बावजूद बगैर किसी नाज-नखरे के अपनी सांगीतिक प्रस्तुति दी। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि परिषद् के कार्यक्रम में प्रस्तुति देने के लिये अपनी फीस लेना तो दूर, वे खुद अपनी ओर से संस्था को ग्यारह हज़ार रूपये भेंट कर गये। मौजूदा दौर के नामचीन पेशेवर गायकों से आप इस तरह के सहृदय व्यवहार और उदारता की कल्पना भी नहीं कर सकते..'

संगीत महर्षियों को नहीं मानदेय की फ़िक्र– 'ग्रेमी अवार्ड प्राप्त पं. विश्व मोहन भट्ट ने भी हमारे यहाँ प्रस्तुति देने के लिये कभी कोई फीस नहीं ली। यहाँ तक कि पं. भीमसेन जोशी और पं. जसराज ने भी परिषद् के कार्यक्रम में आने के लिए कभी भी पैसे की बात नहीं की और जो मानदेय हमने दिया, उसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। यह उन महान कलाकारों का बड़प्पन ही कहलाएगा..'

पुरानी यादों की जुगाली करते हुए वे मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल गौर (जिन्होंने एक ज़माने में भोपाल टेक्सटाइल मिल में उनके मातहत काम किया था) को याद करना हरगिज़ नहीं भूलते- 'गौर साहब को कैसे भूल सकता हूँ जिन्होंने हमारी संस्था द्वारा आयोजित होली महोत्सव में कई बार अतिथियों को स्वयं अपने हाथों से भोजन परोसा..'

..और अब पूर्णाहुति– अधिकांश समय मंच से परे रहकर मंच की रौनक बढ़ाने और महफ़िल सजाने का जूनून पालने वाले पं. सुरेश ताँतेड़ को गत वर्ष अचानक कैंसर जैसी घातक बीमारी ने जकड़ लिया है। शारीरिक अस्वस्थता के चलते विवश होकर उन्होंने अब 2025 में 25 जनवरी को 'उत्सव गणतंत्र' और 14-17 मार्च तक आखिरी बार 'वसंत उत्सव' आयोजित कर भारी मन से 'अभिनव कला परिषद्' व 'मधुबन' की सुदीर्घ कला यात्रा को पूर्ण विराम देने की घोषणा कर दी है।

शुभचिंतकों के लिए एक कला मनीषी का यह फैसला शिरोधार्य करना कलेजे पर पत्थर रखने से कम नहीं है। अक्सर एक उक्ति पढ़ने सुनने को मिलती है- 'काल उसका क्या बिगाड़ेगा जो भक्त हो महाकाल का..!' काश, राजाधिराज महाकाल अपने इस भक्त की सारी पीड़ा हर लें, जो उज्जैन के श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रांगण में 1993 से हर शिवरात्रि पर बड़े जतन से संजोता रहा है संगीत महोत्सव 'उत्सव महाकाल' के नाम से..!!

काव्य संसार

तनुज मिश्र

चाहत नहीं दिखती

मोहल्लों की गलियों में अब इबादत नहीं दिखती;
चलाता हूँ कलम, तब स्याही 'चाहत' नहीं लिखती।
लफ़्ज़ हैं - इश्क़, मोहब्बत, प्यार और तमाम बातें,
ज़मीन की दरी, किसी तखत की चादर में नहीं बिकती।
यूँ छलकते देखता हूँ, आँसुओं को, सारे ज़माने आज मैं,
मैं हँसीं का सौदागर, दे सकूँ उधार वो ताक़त नहीं दिखती ।
वो गुलाब, वो तितली, वो खुशबू ,अच्छा लगता है मगर;
चलाता हूँ कलम, तब स्याही 'चाहत' नहीं लिखती।।

कुछ प्रश्न – वक्त से

हर रात जगाकर नींदों से, क्या नींदों हक भी छीनोगे?
क्या आंसू को भी होंठो से, शरबत की तरह यूं पीलोगे?

बलवान बड़े तुम धरती पर, निशा में भी उजाले करते हो;
पर आशाओं के दीपक को पल भर में बुझाया करते हो?

क्या हाथों में इतनी ज्वाला है जो स्वप्न जलाया करती है?
तीव्र इतनी ज्वलन तुम्हारी जो दुखियों को भी तड़पाया करती है?

कहाँ चले जाते हो जब तुम पर विश्वास जताया जाता है?
क्यों कम पड़ जाते हो जब कोई रोगी दरखास्त लगाता है?

अच्छे बुरे दो चेहरे लेकर क्यों ये सर्कस चलाते हो?
क्यों मासूमियत के चेहरों को खिलाते और मुरझाते हो?

'वक्त' तुम्हारी ताकत का नज़राना रास न आता है,
पल में कोई पुचकारे तुम्हें और पल में कोसता जाता है।

क्या कलम 'तनुज' की चीखेगी और तमाशबीन तुम जीलोगे?
हर रात जगाकर नींदों से, क्या नींदों हक भी छीनोगे?

क्या आंसू को भी होंठो से, शरबत की तरह यूं पीलोगे?

भारतीय गणतंत्र की 75वीं वर्षगांठ

डॉ. भूपेन्द्र कुमार

लेखक शिक्षाविद हैं।

विकसित भारत-सबल भारत

भारत के दो राष्ट्रीय पर्व हैं। एक स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त और दूसरा 26 जनवरी का गणतंत्र दिवस। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ था एवं 26 1950 को स्वतंत्र भारत का संविधान लागू हुआ था । इसलिये पूरे देश में ये दोनों तिथियों पर आयोजनों की धूम होती है । भारत के प्रत्येक गांव, प्रत्येक नगर प्रत्येक विद्यालय और प्रत्येक बस्ती में ये दोनों उत्सव मनाये जाते हैं । इन दोनों उत्सवों के मुख्य आयोजन राजधानी दिल्ली में होते हैं। स्वतंत्रता दिवस आयोजन दिल्ली के लाल किला प्रांगण में और गणतंत्र दिवस आयोजन प्रगति मैदान में होता है । प्रगति मैदान से परेड लाल किले तक जाती है । गणतंत्र दिवस आयोजन में भारतीय सेना के तीनों अंगों की परेड होती है। भारतीय जवान अपने शौर्य का प्रदर्शन भी करते हैं। इसके साथ विभिन्न राज्यों की स्थानीय लोक जीवन एवं प्रगति पर आधारित शोभा यात्रा निकाली जाती है । देशवासी एक ओर भारत की विविधता से परिचित होते हैं और दूसरी ओर भारत की प्रगति से भी अवगत होते हैं। परेड की सलामी राष्ट्रपति लेते हैं। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधानमंत्री द्वारा इंडिया गेट पर अमर जवान ज्योति पर पुष्पांजलि अर्पित करने से होती है । यह पुष्पांजलि देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले सैन्य जवानों को स्मरण करने केलिये होती है। इसके बाद निकलने वाली परेड की सलामी राष्ट्रपति लेते हैं जबकि राज्यों में राज्य स्तरीय आयोजन में उस प्रदेश के राज्यपाल सैन्य सलामी लेते हैं। गणतंत्र दिवस के आयोजन में विशिष्ट सेवाओं और उपलब्धियों के लिये सशस्त्र बलों के जवानों को पदक और नागरिकों को पुरस्कार दिए जाते हैं। सशस्त्र बलों के हेलीकॉप्टर आसमान से परेड क्षेत्र पर पुष्प वर्षा करते हैं। बाल, किशोर और युवा बच्चे नाचते-गाते और देशभक्ति के गीत गाते हुए परेड में भाग लेते हैं। इन्हें बहुत तैयारी के साथ विभिन्न प्रदेशों से चयन करके आमंत्रित किया जाता है। सशस्त्र बलों के जवान मोटरसाइकिल पर विशिष्ट करतव के दिखाते हुये चलते हैं। परेड का समापन भारतीय वायु सेना द्वारा 'फ्लाई पास्ट' के साथ होता है, जिसमें लड़ाकू विमान मंच के पास से गुज़रते हैं, जो प्रतीकात्मक रूप से राष्ट्रपति को सलामी देते हैं। ये भारतीय ध्वज के रंगों में धुएँ के निशान छोड़ते हैं।

इस राष्ट्रीय आयोजन के साथ भारत के सभी प्राँतों की राजधानियों और स्थानीय स्तर पर आयोजन होते हैं। इसमें शासकीय स्तर के साथ विभिन्न संगठनों, विद्यालयों एवं निजी संस्थानों में तिरंगा फहराकर गणतंत्र दिवस का आयोजन होता हैं । इसमें प्रबुद्ध जनों की उपस्थिति और राष्ट्र आधारित साँस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं। 26 जनवरी भारत में पूर्ण स्वराज आरंभ होने का ऐतिहासिक दिन है । इसी दिन भारतीय संविधान लागू हुआ था । इससे पहले 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र तो हो गया था पर राजकाज का संचालन ब्रिटिश कालीन 'भारत अधिनियम 1935' से हो रहा था । भारतीय संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ और इसके साथ 26 जनवरी भारत का 'पूर्ण स्वराज्य दिवस' की तिथि बनी ।

गणतंत्र दिवस आयोजन की दो विशेषताएँ और होती हैं। प्रतिवर्ष इस उत्सव पर मुख्य अतिथि के रूप में कोई विदेशी राज प्रमुख आते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस उत्सव की एक थीम होती है । इस वर्ष मुख्य अतिथि के रूप में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति महामहिम प्रबोवो सुबिआंतो भारत आ रहे हैं। उन्होने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है और वे 25 जनवरी 2025 को नई दिल्ली पहुँच जायेंगे। यह भी संभावना है कि प्रधानमंत्री श्रीनरेंद्र मोदी की उनसे द्विपक्षीय वार्ता होगी और कोई महत्वपूर्ण समझौता भी हो सकता है । गणतंत्र दिवस के उत्सव में सूत्र के रूप थीम घोषित करने का उद्देश्य राष्ट्र निर्माण में जन जागरण का वातावरण बनाना है । इस वर्ष की थीम 'स्वर्णिम भारत-विकास के साथ विरासत' है । प्रधानमंत्री श्रीनरेंद्र मोदी ने भारत को विश्व में सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनाने का संकल्प व्यक्त किया है । वे भारत के विकास को पंख तो लगाना चाहते हैं लेकिन अपनी विरासत को सहेजते हुये । भारत यदि विश्व में प्रतिष्ठित रहा है तो अपनी गौरवशाली संस्कृति के आधार पर ही ।

इसलिये प्रधानमंत्री श्रीनरेंद्र मोदी ने 'विकास के साथ विरासत' का नारा दिया है । उन्होंने 'विकास के साथ विरासत' का यह आव्हान भारत के संविधान निर्माताओं की भावना के अनुरूप किया है । भारत के संविधान के प्रावधानों के अतिरिक्त संविधान में जो चित्र अंकित किये गये हैं वे सभी भारत की गौरवशाली विरासत का संदेश देते हैं। भारत के संविधान में ऐसे कुल बाईस चित्र हैं। इनमें वैदिक काल के गुरुकुल, भागीरथ की तपस्या, लंका पर रामजी की विजय, नटराज, हनुमानजी, गीता का उपदेश देते भगवान श्रीकृष्ण, मोहन जोदड़ो के चित्र, भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी के अतिरिक्त मौर्य एवं गुप्त काल की गरिमाचित्र, विक्रमादित्य का दरबार, नालंदा विश्वविद्यालय, उड़िया मूर्तिकला, मुगलकाल में अकबर का दरबार, शिवाजी और गुरु गोविंद सिंह, टीपू सुल्तान, रानी लक्ष्मीबाई, गांधीजी की दांडी यात्रा आदि चित्र हैं। ये चित्र संविधान की सजावट के लिये नहीं जोड़े गये हैं अपितु भारतीय समाज जीवन को विशिष्ट संदेश देते हैं। अपने कर्म कर्तव्य की प्रेरणा देते हैं। संविधान में चित्रित इन विभूतियों, अथवा दर्शाए गई घटनाओं के चित्र भारतीय विरासत का गौरव हैं। चित्रों से स्पष्ट है कि संविधान निर्माता स्वतंत्र भारत की विकास यात्रा का आधार विरासत को बनाना चाहते थे। इसी भावना को ध्यान में रखकर संविधान में इन चित्रों का चयन किया गया है । इसी संदेश को ध्यान में रखकर मोदी जी ने अपनी विकास यात्रा विरासत से जोड़ी है ।

वैश्विक विशेषताएं– भारतीय संविधान संसार का सबसे विशिष्ट संविधान माना जाता है । भारत की संविधान सभा ने दुनिया के सभी संविधानों का अध्ययन किया और हर संविधान के विशिष्ट प्रावधानों को अपने संविधान में शामिल किया। नागरिक स्वतंत्रता के जितने अधिकार भारतीय संविधान में हैं उतने दुनिया के किसी अन्य संविधान में नहीं। भारतीय संविधान की दूसरी विशेषता संविधान की विशालता है । इतना विस्तृत संविधान दुनियाँ में कोई नहीं। यह सबसे व्यापक लिखित संविधान है । भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता का प्रावधान तो है लेकिन इसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्मानुसार आचरण करने की पूरी स्वतंत्रता है । इसमें नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य की स्पष्ट विवेचना है। इसमें संघात्मकता भी है और एकात्मकता भी है। भारतीय संविधान में सत्ता चयन केलिये संसदीय प्रणाली को सुनिश्चित किया है तथा संचालन केलिये विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका जैसे तीन अंग सुनिश्चित किये । तीनों के बीच कार्यों, अधिकार और दायित्व का स्पष्ट निर्धारण किया । संविधान में इन तीनों संस्थाओं का प्रमुख होने का अधिकार भारत के राष्ट्रपति को दिये गये हैं । भारतीय संविधान में केंद्र और राज्य सरकार के बीच विषयों और कार्यों का स्पष्ट विभाजन है। केन्द्र सरकार को कुछ आपात अधिकार भी दिये गये हैं जिससे वह केन्द्र राज्य में हस्तक्षेप कर सकता है ।

26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने के साथ गणतंत्र दिवस उत्सव मनाने की परंपरा भी आरंभ हुई । 26 जनवरी 1950 को पहले गणतंत्र दिवस पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने 21 तोपों की सलामी के साथ ध्वजारोहण किया था। ध्वजारोहण के साथ राष्ट्गान 'जन गण मन...' का गायन हुआ और डा राजेन्द्र प्रसाद जी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुये भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों एवं अन्य वीर सपूतों का स्मरण किया। उन्होंने भारत को पूर्ण गणतंत्र राष्ट्र घोषित करते हुये 26 जनवरी को राष्ट्रीय पर्व भी घोषित किया गया। इस आयोजन में देशाक्ति गीत, राज्यों की चित्रकला एवं अन्य क्षेत्रीय विशेषताओं की झाँकी तथा सेना के तीनों की परेड हुई । यह एक ऐतिहासिक पल था । इस पहले गणतंत्र दिवस आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो भारत आये थे। उसी आयोजनभारत के प्रत्येक गणतंत्र दिवस पर विदेशी राज प्रमुख को आमंत्रित करने की परंपरा आरंभ हुई जो आज भी यथावत है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

सम्पूर्णता नहीं, श्रेष्ट प्रस्तुति से जाँचिये इस वेबसिरीज को

पाँच साल बाद जब किसी हिट सिरीज़ का दूसरा सीज़न आता है तो पहला सवाल यही होता है कि आखिर इतना लम्बा इंतज़ार क्यों ? इसका जवाब कुछ कुछ वैसा ही जैसा अमजेन प्राइम वीडियो अपनी पिछली सिरीज़ 'मिर्जापुर' के बीते सीज़न में दे चुका है। वैसे इसका एक प्रमुख कारण तो मूल कहानी में कोई नये मोड़ या नये कोण के साथ आगे बढ़ना ही होता है । यहाँ भी अमेजान ने गत सत्रह जनवरी को रिलीज पाताललोक (सीज़न दो) में ऐसा ही कुछ किया है । वेबसिरीज़ की कहानी को दिल्ली के पाताललोक से निकालकर उत्तर पूर्व के माफिया लोक तक पहुँचा दिया है यद्यपि इसके बाद भी इसे सम्पूर्ण की संज्ञा तो नहीं दी जा सकती है। मगर जैसा कि कहा जाता है दुनिया की हर दूसरी चीज सम्पूर्ण नहीं होती है ठीक वैसे ही पाताललोक (सीज़न दो)भी सम्पूर्ण नहीं है, लेकिन अगर यह कहें कि आज के समय में आई कुछ बढ़िया वेबसिरीज में से पाताललोक (सीज़न दो) भी एक है तो गलत नहीं होगा । इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि यदि आपको इस वेबसिरीज को जाँचना है तो उसे सम्पूर्णता नहीं, श्रेष्ठता के पैमाने पर जाँचिये और आप निराश नहीं होंगे।

सुदीप शर्मा ने इस बार अभिषेक बनर्जी, राहुल कनौजिया और तमल सेन के साथ मिलकर इस सिरीज़ की कहानी गढ़ी है। कहानी के आखिर में अनोखा सा अचरज रचकर आगे का एक नया रास्ता भी खोल लिया है, लेकिन ये वह भी जानते हैं कि इस बार मामला मौलिक कम बनावटी ज्यादा है। एक मजदूर के लापता होने और नागालैंड से दिल्ली एक वार्ता के लिए आए दबंग नागा नेता का होटल के भीतर सिर काट दिए जाने की दो अलग-अलग तफ्तीशों से शुरू हुई कहानी के सिरों का वहाँ आकर संगम होता है, जहां हाथीराम चौधरी और इमरान अंसारी की मुलाकात फिर से होती है। हाथीराम अब भी जमनापार का इंस्पेक्टर हैजबकि अंसारी अब आईपीएस बन चुका है। लैब के एक्सपेरिमेंट जैसी इस कहानी में फिर अन्नानास के नाम पर हेरोइन का धंधा आ मिलता है। नॉर्थ ईस्ट के विद्रोहियों को होने वाली फण्डिंग का सिरा भी खुलता है और ये भी खुलता है कि उत्तर पूर्व में बरसों से हिंसा भड़का रहे ये उग्रवादी आखिर करते क्या हैं, कमाते क्या हैं और खाते-पीते क्या हैं? एक तरह से इस बार हाथीराम चौधरी को उत्तर पूर्व के तथाकथित विद्रोहियों के चेहरे का नकाब हटाना था और वे इसमें सफल रहे हैं ।

इस वेबसिरीज़ की अभिनेता और अभिनेत्रियां का चयन काफी दिलचस्प है । सिरीज़ में कोई ए-लिस्ट एक्टर नहीं है। यहाँ वो सभी एक्टर्स हैं, जिन्हें आपने किसी फिल्म, शो या सिरीज में सपोर्टिंग रोल में देखा होगा और उनका काम पसन्द किया होगा । मुख्य भूमिकाओं में जयदीप अहलावत, नीरज काबी, इश्वाक सिंह, अभिषेक बनर्जी हैं। सपोर्टिंग कास्ट में स्वस्तिका मुखर्जी, गुल पनाग, विपिन शर्मा, आकाश खुराना और निहारिका लायरा दत्ता है । ऐसा चयन बड़ा जोखिम भरा होता है मगर सभी एक्टर्स ने सिरीज़ बनाने वालों को निराश नहीं किया। हाथीराम की भूमिका में जयदीप अहलावत इस सिरीज में सबसे अव्वल हैं । एक पुलिसकर्मी की भूमिका में उनका काम बहुत अच्छा है । वो आपको अपनी भूमिका पर विश्वास दिलाते हैं । एक ऐसे पुलिसवाले की भूमिका में जो खुद को साबित करना चाहता है, वह वर्दी के बोझ तले दबा है और अपने घर और अतीत से काफी हद तक परेशान भी है और इस सबको जयदीप ने बड़ी सहजता से निभाया है । उनके साथी इमरान अंसारी की भूमिका में इश्वाक सिंह हैं, जिनका एक्टिंग का अपना तरीका है , वो अपने लिए दर्शकों के दिल में अलग जगह बनाते हैं। वहीं पत्नी की भूमिका में गुल पनाग भी अच्छी हैं । उनकी भूमिका में अभिव्यक्ति की ज़्यादा गुँजाईश नहीं हैं, लेकिन जो रोल मिला उसे उन्होंने ठीक से निभाया । हाथीराम के बेटे सिद्धार्थ की भूमिका को शर्मा ने बखूबी निभाया है । नीरज काबी, न्यूज एंकर संजीव मेहरा की भूमिका में बहुत अच्छे लगे हैं। उनका काम काबिल-ए-तारीफ है। उनकी पत्नी डॉली की भूमिका में स्वस्तिका मुखर्जी ने भी बढ़िया काम किया है । साथ ही एक यंग पत्रकार के रोल में निहारिका लायरा दत्ता और विशाल उर्फ हथौड़ा त्यागी की भूमिका में अभिषेक बनर्जी का काम भी अच्छा है ।

इस वेबसिरीज़ का निर्देशन जाने माने निर्देशकों अविनाश अरुण और प्रोसित रॉय ने किया है और उनकी दक्षता से सिरीज़ का यह पक्ष इतना मज़बूत हो गया है कि दर्शकों को इस मामले में कहीं कोई निराशा हाथ नहीं लगती है। 'उड़ता पंजाब' और 'एन एच टेन' जैसी फिल्मों के लेखक सुदीप शर्मा की कहानी पर बनी यह सिरीज़ लेखन के सन्दर्भ में भी ठीक-ठाक बुनावट वाली सिरीज़ है । पाताल लोक का डायरेक्शन, स्क्रीनप्ले और एडीटिंग तीनों ही पक्ष शानदार है । एक सिरीज़ जब किसी सुस्पष्ट कहानी और कसी हुई पटकथा के साथ सामने आती है तो वो दर्शकों द्वारा खूब पसन्द की जाती है और 'पाताललोक टू' के साथ ऐसा ही है ।

सिरीज़ के इस सीज़न की खामियों की बात करें तो इस सीजन की पटकथा भी दिल्ली से लेकर नागालैंड तक बिखर जाती है। और संवाद चूँकि बहुत सारे नागालैंड की बोली नागामी में है अतः हिन्दी के आम दर्शक को हिन्दी से अँग्रेजी, अँग्रेजी से नागामी में शिफ्ट होने में परेशानी भी हो अगर आप जयदीप अहलावत के प्रशंसक हैं तो इसे एक एक एपीसोड करके अगले पूरे हफ्ते में देख सकते है लेकिन अगर आप बिंज वॉच के चक्कर में इसे देखने बैठते हैं तो आपको निराशा ही हाथ लगेगी। सिरीज का बैकग्राउंड म्यूजिक पहले सीजन जैसा ही है। उत्तर पूर्व के कलाकारों ने थोक के भाव में सिरीज में काम किया है, लेकिन प्रशांत तमांग के अलावा असरदार काम किसा दूसरे का नहीं है।

गणतंत्र दिवस विशेष

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक भारत के राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

75 वर्ष बाद भी संविधान नहीं जानते लोग

भारत में दलित, वंचित, शोषित, आदिवासी और विभिन्न उत्पीड़ितों का समाज इस प्रकार उभरकर सामने आता है। एक ऐसा समाज उभरकर आता है जो अभी भी न्याय व गरिमा से वंचित होने की कहानी कहता है। भारत में चंद धनाढ्यों तक ही न्याय व तंत्र की पहुँच इससे स्पष्ट होती है। भारत के अखिल भारतीय स्तर पर संविधान की समझ का अभाव इस बात का प्रतीक है कि भारत में अभी भी स्वतंत्रता, समानता व बंधुता की अवधारणा केवल अवधारणा बनकर रह गयी है। ईंट-भट्ठे पर काम कर रहे मजदूर, मजदूरों के बच्चे, रिक्शा चला रहा रिक्शावन और मछली मारकर जीवन यापन कर रहे मछुआरे संविधान को अभी भी नहीं जानते तो देश में जो विकास की तरंग स्पंदित हो रही है, वह क्या एक छलावा मात्र है?

देश में हमारा संविधान-हमारा स्वाभिमान अभियान जारी है। भारतीय संविधान की 75वीं वर्षगांठ तथा भारत के गणतंत्र के रूप में स्थापित होने के उपलक्ष्य में यह अभियान लोगों में संविधान की जागरूकता के लिए सरकार चला रही है। सरकार समावेशिता और सुगमता पर ध्यान केंद्रित करते हुए कानूनी तंत्रों के माध्यम से अपने अधिकारों की रक्षा के लिए ज्ञान और उपकरणों से नागरिकों को सशक्त बनाना चाहती है लेकिन इस अभियान से एक बात तो स्पष्ट हो चुकी है कि भारतीय नागरिक अभी भी संविधान से परिचित नहीं है। आज़ादी के 75 वर्ष बाद और संविधान लागू होने की तिथि 26 जनवरी 1950 के 75वें वर्ष पर भी यदि भारतीय नागरिक संविधान नहीं जानते तो उस देश का भाग्य विधाता भगवान ही हैं। इसका मायने यही होता है कि हमारे देश ने अभी तक पूर्णतया अपनी आज़ादी को जीवन का हिस्सा बना नहीं पाया। सच कहें तो न्याय व गरिमा से भी कहीं न कहीं वंचित है। जिसे न्याय मिले भी हैं वे या तो यहाँ के वकीलों के भ्रम और सत्य के बीच जूझकर या फिर किसी न्यायाधीश के अपने विवेक पर मिल सके।

भारत में दलित, वंचित, शोषित, आदिवासी और विभिन्न उत्पीड़ितों का समाज इस प्रकार उभरकर सामने आता है। एक ऐसा समाज उभरकर आता है जो अभी भी न्याय व गरिमा से वंचित होने की कहानी कहता है। भारत में चंद धनाढ्यों तक ही न्याय व तंत्र की पहुँच इससे स्पष्ट होती है। भारत के अखिल भारतीय स्तर पर संविधान की समझ का अभाव इस बात का प्रतीक है कि भारत में अभी भी स्वतंत्रता, समानता व बंधुता की अवधारणा केवल अवधारणा बनकर रह गयी है। ईंट-भट्ठे पर काम कर रहे मजदूर, मजदूरों के बच्चे, रिक्शा चला रहा रिक्शावन और मछली मारकर जीवन यापन कर रहे मछुआरे संविधान को अभी भी नहीं जानते तो देश में जो विकास की तरंग स्पंदित हो रही है, वह क्या एक छलावा मात्र है?

जब संविधान बनाया गया तो इसमें बहुत से न्यायविदों ने अपना योगदान दिया। उन्होंने तरह-तरह के अधिकारों के साथ इसे सुरक्षित व समृद्ध संविधान बनाया कि देश का हर नागरिक इसकी पहुँच का हिस्सा होगा और इसमें जो प्रावधान किए जा रहे हैं, वे सभी को मिलेंगे। लेकिन हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक स्वीकृतियों के साथ सरकारें जिस संवैधानिक मूल्यों को लेकर बढ़ीं, उनके सत्य आज दुनिया के सामने हैं। अभी भी देश में ऐसे अनेक स्थान हैं जहाँ स्त्रियाँ, बच्चे व बूढ़े अपने न्याय के लिए तरस जा रहे हैं। भू-अभिलेखों से नाम का गायब हो जाना, किसी बच्चे की बेबसी का दिखना, भूख और गरीबी का आलम ऐसा कि लगभग 80 करोड़ लोगों का पांच किलो के रसद पर जीवन जीना, यह भारत का सच, संविधान की पूर्ण समझ होती तो शायद न होता।

जब यह देश अंग्रेजों के हाथ में था तो अनेक रियासतें और अंग्रेजी सरकार भारत का भाग्य तय कर रहे थे। सन 1950 में जब संविधान लागू हुआ और हम भारत के लोग गणतांत्रिक देश के नागरिक होने का सौभाग्य प्राप्त किए, तब से अब तक का भाग्य तो हमने लिखा है फिर हम किसी को आज इसका दोषी भी नहीं ठहरा सकते। आज का भारत तो भारतीय तरीके का है यदि आज धर्म, जाति, लिंग और कोई अन्य कारण से हमारे जीवन को गतिशील बनाने में बाधा है तो यही कहा जा सकता है कि भारतीय संविधान के लागू होने के बाद भी कहीं न कहीं हम अपने अधिकारों से वंचित हैं और या तो हम अपने संविधान के प्रावधान से अनभिज्ञ हैं। ऐसे में, आज कई सवाल है हमारे सामने कि आखिर भारत के नागरिक आगामी कितने वर्षों में संविधान के प्रावधान से पूर्णतया अवगत हो सकेंगे? भारत के नागरिक अपने हक के लिए कब खड़ा होना सीखेंगे? और संविधान के अनुकूल भारतीय समृद्धि और विकास की दिशा और दशा बदलने में कब हम सक्षम हो सकेंगे? यदि यह सवाल आने वाले समय में अधिक समय तक विद्यमान रहेंगे तो निःसंदेह इससे तो भारत कभी भी सक्षम, सशक्त और विकसित भारत नहीं बन सकेगा, एक बात तो यह तय है।

हाल ही में, संविधान पर भारतीय सदन में खूब चर्चा हुई। इस सदन में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि हमारे संविधान के निर्माण की प्रक्रिया में हमारे देश की नारी शक्ति ने संविधान को सशक्त करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी। संविधान सभा में 15 माननीय महिला सदस्य थीं और सक्रिय सदस्य थीं। मौलिक चिंतन के आधार पर उन्होंने संविधान सभा की डिबेट को समृद्ध किया था और वह सभी बहने अलग-अलग बैकग्राउंड की थीं, अलग-अलग क्षेत्र की थीं। और संविधान में उन्होंने जो जो सुझाव दिए, उन सुझाव का संविधान के निर्माण पर बहुत बड़ा प्रभाव रहा था और हमारे लिए गर्व की बात है कि दुनिया के कई देश आजाद भी हुए, संविधान भी बने, लोकतंत्र भी चला, लेकिन महिलाओं को अधिकार देने में दशकों बीत गए थे। लेकिन हमारे यहां शुरुआत से ही महिलाओं को वोट का अधिकार संविधान में दिया गया है। निःसंदेह बातें प्रधानमंत्री की शत-प्रतिशत सही हैं लेकिन कदाचित यह वोट तक केवल संविधान की समझ उचित लगती।

हमने देश में संविधान का अर्थ वोट तो नहीं हो सकता। वोट देना संविधान को जानना नहीं कहा जा सकता। सच यही है कि आज तक भारत के लोग यही जानते हैं कि हमने वोट दिया यानी हम संविधान जानते हैं लेकिन यदि यही सच भारत में बना रहा तो भारत में संविधान की इलिटरेसी बनी रहेगी और धनाढ्य वर्ग उनका फायदा उठता रहेगा, यह बात तो तय है। भारत के लिए यह अच्छी बात नहीं है की यहाँ संविधान के लिए एक जागरूकता चलायी जानी शुरू हो और वह भी संविधान लागू होने के 75 वर्ष बाद।

आज जब विश्व में विभिन्न प्रकार के रचनात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के शोर हों तो ऐसे में संविधान जानना कितना ज़रूरी है, इसे आज समझने की आवश्यकता है। संविधान के साथ अपने अधिकार व कर्तव्यबोध का भी भान होना ज़रूरी है। ऐसे में देश में सरकार, समाज, स्वयंसेवी संगठन और प्रबुद्ध वर्ग की जिम्मेदारी बढ़ गयी है कि संविधान की जानकारी से सभी को समृद्ध करें और राष्ट्र में सभी की गरिमा सुनिश्चित करें। भारत में जानकारी के आभाव में कोई अपने अधिकारों से यदि वंचित रह गया तो समझो कि भारत की यह सबसे बड़ी हानि है क्योंकि सबकी समृद्धि व विकास की राह चलने से ही हम विकसित भारत बना सकेंगे। संविधान की जानकारी का अभाव का तात्पर्य है मानवाधिकारों की जानकारी का अभाव। यह ऐसी बेला है जब हमें कृत संकल्प होकर संविधान व मानवाधिकारों के सभी प्रावधानों को जन-जन तक समझाना होगा।

26 जनवरी 1950 के बाद आज जब हम इक्कीसवीं शताब्दी की अनेक चुनौतियों का सामना करने का संकल्प लेकर भारत को सशक्त देश बनाने की कोशिश में हैं और विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में आगे निकलने की होड़ में हैं तो ऐसा कहना और सुनना कि हमारे देश के नागरिकों में से अधिकाँश संविधान नहीं जानते, बेहद शर्मिंदित होने की बात है। सोचना यह है कि क्या हम शर्मिंदा होकर जीने के लिए आतुर हैं, या गरिमा के साथ सम्पूर्ण मानवता के लिए जीने हेतु तत्पर हैं? हमने यदि न्याय, समता, बंधुता, स्वतंत्रता व गरिमा के बारे में नहीं सोचा और सरकार इसे हर नागरिक का हिस्सा नहीं बना सकेगी तो निःसंदेह भारत अपनी आँखों में कभी गर्व की अनुभूति नहीं कर सकेगा।

संविधान का अमृत महोत्सव

सत्येन्द्र पाण्डेय

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

सामाजिक बदलाव का दिशासूचक: भारत का संविधान

भारत का संविधान क्या है? बहुत संक्षेप में समझने की बात हो तो यह कहा जा सकता है कि हमारा संविधान वास्तव में उन सपनों और आकांक्षाओं का सूत्रीकरण हैं जो हमारे महान स्वाधीनता संग्राम के दौरान देखे गए थे। हम जानते हैं कि हमारी आज़ादी की लड़ाई में अनेक राजनीतिक विचारधाराओं के लोग शामिल थे और सभी ने अपने- अपने हिसाब से यह सपना देखा था कि देश की आजादी के बाद वे किस तरह का भारत बनाना चाहते हैं? संविधान सभा के गठन में जिस तरह से सभी वर्गों, क्षेत्रों और विचारधाराओं का समेकन और सहभागिता को सुनिश्चित किया गया उसने इस बात को संभव बनाया कि इन तमाम सपनों को हमारे संविधान में शामिल किया जा सके। इसलिए जाहिर है कि यह संविधान किसी एक सपने, किसी एक विचारधारा अथवा किसी एक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व नहीं करता बल्कि यह आज़ादी की पूरी लड़ाई और समग्र देश की चिंतन और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को संविधान के साथ जोड़ने के लिए मूल्य आधारित नजरिये की जरुरत है।

आज भारत के संविधान को लागू हुए 75 वर्ष पूर्ण हो गए। भारतीय पारंपरिक शब्दावली में बात करें तो यह हमारे संविधान का अमृत महोत्सव है। इसका एक प्रतीकात्मक अर्थ यह भी है कि हमने इतने वर्षों तक इस संविधान को सलामत रख लिया है कि इसे अमरत्व प्राप्त हो गया है और अब इसे चिरकाल तक स्थाई बनाया रखा जा सकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि संविधान के समक्ष कोई चुनौती नहीं है। चुनौतियाँ हैं और बहुत बड़ी हैं लेकिन इतने वर्षों तक अनेक विषमताओं और मुश्किल हालात के दौरान एक देश के तौर पर हम इस संविधान के साथ खड़े रहे हैं तो इससे यह समझा जा सकता है कि एक देशव्यापी सहमति संविधान के साथ है और यह तमाम राजनीतिक असहमतियों के बावजूद है। अर्थात लोगों के बीच में उनके राजनीतिक विचारों को लेकर तो गहरी असहमतियां हैं लेकिन संविधान के महत्व को लेकर आम तौर पर सहमति है। इसलिए भारत सरकार ने संविधान के 75 साल पूर्ण होने पर इसे उत्साहपूर्वक मनाये जाने की जो घोषणा की है, वह स्वागत योग्य है।

आज़ादी आन्दोलन के मूल्यों का विस्तार- भारत का संविधान क्या है? बहुत संक्षेप में समझने की बात हो तो यह कहा जा सकता है कि हमारा संविधान वास्तव में उन सपनों और आकांक्षाओं का सूत्रीकरण हैं जो हमारे महान स्वाधीनता संग्राम के दौरान देखे गए थे। हम जानते हैं कि हमारी आज़ादी की लड़ाई में अनेक राजनीतिक विचारधाराओं के लोग शामिल थे और सभी ने अपने- अपने हिसाब से यह सपना देखा था कि देश की आजादी के बाद वे किस तरह का भारत बनाना चाहते हैं? संविधान सभा के गठन में जिस तरह से सभी वर्गों, क्षेत्रों और विचारधाराओं का समेकन और सहभागिता को सुनिश्चित किया गया उसने इस बात को संभव बनाया कि इन तमाम सपनों को हमारे संविधान में शामिल किया जा सके। इसलिए जाहिर है कि यह संविधान किसी एक सपने, किसी एक विचारधारा अथवा किसी एक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व नहीं करता बल्कि यह आज़ादी की पूरी लड़ाई और समग्र देश की चिंतन और आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति है।

भारतीय आधुनिकता का प्रतीक- हमारा संविधान एक आधुनिक दस्तावेज है। हमारे संविधान के निर्माता खासकर डॉ. आंबेडकर और जवाहरलाल नेहरु इस आधुनिकता के सूत्रधार हैं। इस आधुनिकता के सूत्र उस दौर में चल रहे वैश्विक आधुनिकता आन्दोलन से जुड़े हुए हैं लेकिन अपने सन्दर्भों के यह खास तरह की भारतीय आधुनिकता का सर्वोत्कृष्ट प्रतीक भी है। यह संविधान की आधुनिक विश्वदृष्टि ही है कि इसमें समाज को समूहों को महत्व प्रदान करने के बावजूद व्यक्ति को प्रधानता दी है। हमारा संविधान मूल रूप से व्यक्तियों को आजादी और अधिकार प्रदान करता है। क्योंकि हमारे संविधान निर्माता इस बात से जागरूक थे कि यदि व्यक्ति के बरअक्स यदि समाज को प्रधान बनाया गया तो नए बन्ने वाले समाज में भी व्यक्ति के अधिकारों को बाधित किया जा सकता है जैसे कि सदियों से होता ही रहा था। इस तरह से समाज के वंचित समुदायों से आने वाले लोगों जैसे दलित, आदिवासी और महिलाओं को समता और

गरिमा हासिल हुई तथा विशेष प्रावधानों से सक्षमता हासिल हो सकी। भारत का संविधान दुनिया का विरला संविधा है जिसने अपने लागु होने के पहले दिन से सभी महिलाओं और प्रत्येक नागरिक को बिना किसी भेदभाव के मताधिकार प्रदान किया। आज यह बात चाहे जितनी कम महत्वपूर्ण प्रतीत हो लेकिन है उतनी ही आवश्यक जितना कि मनुष्य के जीवित रहने के लिए सांस लेना जरुरी है।

मूल्य आधारित दृष्टिकोण- संविधान को समझने के अनेक दृष्टिकोण हो सकते हैं। राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, क्षेत्रीय आदि-इत्यादि। यह इस बात पर निर्भर करता है कि देखने का नजरिया क्या है और कौन उसकी व्याख्या कर रहा है? अनेक लोग संविधान को उसके प्रावधानों के अनुसार देखते हैं और फिर उनके मूल को तलाशने निकल जाते हैं। चूँकि हमारे संविधान का मकसद ही राजनातिक रूप से एक लोकतंत्रात्मक गणराज्य स्थापित करना तथा सामाजिक रूप से सामाजिक न्याय को उपलब्ध कराना तथा प्रत्येक रूप में असमानता को समाप्त करना है। इसलिए वंचित समुदायों के लिए इसका महत्व बहुत अधिक हो जाता है और अधिकार आधारित दृष्टिकोण प्रधान होता हुआ दिखाई देता है। यह बात सही भी है कि लोकतंत्र का मकसद सभी को बराबरी, सम्मान, गरिमा और जीवन जीने के लिए बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराना है। इन बातों का महत्व उनके लिए बहुत अधिक है जो ऐतिहासिक रूप से अवसरों से वंचित रहे हैं। इसलिए यह अकारण नहीं है कि हमारे ही समाज के वंचित समुदायों दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक और महिलाओं में संविधान का अद्वितीय सम्मान और महत्त्व है। लेकिन एक अलग नजरिये से यह चिंता की बात भी है। जिन लोगों और समूहों के लिए अवसर पहले से उपलब्ध रहे थे या आज जो लोग सुविधा संपन्न हो गए हैं, उनके लिए संविधान का क्या महत्त्व है? संभव है कि अधिकार आधारित दृष्टिकोण समाज के सभी वर्गों को संविधान के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ने में सक्षम न दिखाई दे इसलिए हमें मूल्य आधारित दृष्टिकोण पर विचार करने की आवश्यकता है।

हमारा संविधान वास्तव में मूल्य आधारित दस्तावेज है। संविधान में समाहित मूल्य खासकर गरिमा, न्याय, बंधुता, समता, लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि दो माध्यमों से आये हैं। एक तो हमारा आजादी आन्दोलन और दूसरा मानवीय मूल्य। हमारे संविधान के मूल्य वास्तव में मानवता के मूल्य हैं और इन पर विश्वास करना मानवता पर विश्वास करना है और इन्हें अपनाना एक भारतीय के साथ साथ एक सच्चा मनुष्य बनने की यात्रा भी है। हालाँकि यह बात भी उल्लेखनीय है कि हमारे संविधान में अन्तर्निहित मानवीय मूल्य भारतीय समाज के अनेक हिस्सों में प्रचलित सामाजिक मूल्यों से प्रथक हैं बल्कि अनेक बार उन्हें चुनौती भी देते हैं। जाति, वर्ग और जेन्डर की विषमताओं में विभक्त हमारे समाज की संरचना सामंती रही है और इसलिए समता, बंधुता तथा लोकतंत्र को जीवन में उतार पाना सामंती मानसिकता के साथ संभव नहीं होता लेकिन आधुनिक दौर में कोई भी सामंती मानसिकता के साथ अपना वैयक्तिक और सामाजिक विकास नहीं कर सकता और इसके लिए संविधान के मूल्य ही जरुरी हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को संविधान के साथ जोड़ने के लिए मूल्य आधारित नजरिये की जरुरत है।

गणतंत्र दिवस विशेष

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्तंभकार हैं।

युवा पीढ़ी और गणतंत्र दिवस की प्रासंगिकता

गणतंत्र दिवस का सबसे बड़ा संदेश है भारतीय संविधान का सम्मान और इसे जीवन का मार्गदर्शक मानना। संविधान केवल एक दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र का आधार है। आज की युवा पीढ़ी को यह समझने की जरूरत है कि संविधान ने उन्हें समानता, स्वतंत्रता और न्याय के अधिकार दिए हैं। लेकिन यह अधिकार तभी सार्थक हैं जब वे अपने कर्तव्यों का पालन करें। यह दिन उन्हें यह सोचने का अवसर देता है कि वे किस प्रकार देश के विकास और सामाजिक सुधारों में योगदान दे सकते हैं। शिक्षा संस्थानों और सामाजिक संगठनों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि युवा संविधान की मूलभूत संरचना और उसके उद्देश्यों को समझें। संविधान में निहित मूल्यों को अपनाने से ही वे एक सशक्त और आदर्श नागरिक बन सकते हैं।

भारत का गणतंत्र दिवस हमारे संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों का उत्सव है। यह दिन न केवल स्वतंत्रता संग्राम के नायकों की याद दिलाता है, बल्कि हमारे देश के नागरिकों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों की भी शिक्षा देता है। आज की युवा पीढ़ी, जो देश का भविष्य है, उनके लिए गणतंत्र दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं होना चाहिए, बल्कि यह दिन उनकी जिम्मेदारियों, देशभक्ति और संविधान की गहराई को समझने का अवसर बनना चाहिए। आधुनिक जीवनशैली और बदलते सामाजिक परिवेश के बावजूद, यह आवश्यक है कि युवा पीढ़ी इस ऐतिहासिक दिन की प्रासंगिकता को महसूस करे और इसे अपने जीवन में लागू करे।

गणतंत्र दिवस का सबसे बड़ा संदेश है भारतीय संविधान का सम्मान और इसे जीवन का मार्गदर्शक मानना। संविधान केवल एक दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र का आधार है। आज की युवा पीढ़ी को यह समझने की जरूरत है कि संविधान ने उन्हें समानता, स्वतंत्रता और न्याय के अधिकार दिए हैं। लेकिन यह अधिकार तभी सार्थक हैं जब वे अपने कर्तव्यों का पालन करें। यह दिन उन्हें यह सोचने का अवसर देता है कि वे किस प्रकार देश के विकास और सामाजिक सुधारों में योगदान दे सकते हैं। शिक्षा संस्थानों और सामाजिक संगठनों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि युवा संविधान की मूलभूत संरचना और उसके उद्देश्यों को समझें। संविधान में निहित मूल्यों को अपनाने से ही वे एक सशक्त और आदर्श नागरिक बन सकते हैं।

गणतंत्र दिवस केवल संविधान की समझ तक सीमित नहीं है, यह राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति का भी प्रतीक है। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि भले ही हमारी भाषाएं, धर्म और संस्कृतियां अलग-अलग हों, लेकिन हम सब भारतीय हैं। यह विविधता में एकता का संदेश हर युवा तक पहुंचना चाहिए। आज की पीढ़ी को यह सिखाने की आवश्यकता है कि देशभक्ति केवल भाषणों और झंडा फहराने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सक्रिय जिम्मेदारी है। देशभक्ति का मतलब है अपने देश के हर नागरिक के प्रति समानता और सम्मान का भाव रखना। युवा पीढ़ी को इस भावना को अपने जीवन में शामिल करना चाहिए और समाज में फैली असमानता और भेदभाव को खत्म करने के लिए काम करना चाहिए। यह तभी संभव है जब वे अपनी संस्कृति और इतिहास को समझें और उससे प्रेरणा लें।

आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया युवा पीढ़ी के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह माध्यम गणतंत्र दिवस की प्रासंगिकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। सोशल मीडिया पर गणतंत्र दिवस से संबंधित ऐतिहासिक कहानियां, प्रेरक विचार और संविधान के सिद्धांतों को साझा किया जा सकता है। डिजिटल अभियानों के जरिए युवाओं को इस दिन के महत्व से जोड़ा जा सकता है। इसके साथ ही, युवाओं को यह सिखाने की जरूरत है कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि

सकारात्मक बदलाव लाने के लिए भी किया जा सकता है। गणतंत्र दिवस के अवसर पर डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर सकारात्मक संदेश और देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करना युवाओं को अपने देश के प्रति गर्व महसूस करने का अवसर देता है।

गणतंत्र दिवस का महत्व केवल राष्ट्रभक्ति के भाव तक सीमित नहीं है, यह सामाजिक कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझने का भी दिन है। आज की युवा पीढ़ी को यह समझना चाहिए कि उनका कर्तव्य केवल अपनी व्यक्तिगत प्रगति तक सीमित नहीं है। उन्हें समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी समझना होगा। स्वच्छता अभियान, बालिका शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, और समानता जैसे सामाजिक मुद्दों पर काम करके वे देश के विकास में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। गणतंत्र दिवस उन्हें यह प्रेरणा देता है कि वे अपने अधिकारों का उपयोग करते हुए समाज के सुधार के लिए काम करें। युवाओं को यह समझने की जरूरत है कि उनकी छोटी-छोटी पहलें भी बड़े बदलाव का कारण बन सकती हैं।

इतिहास और संस्कृति को समझना भी गणतंत्र दिवस का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह दिन केवल परेड और झांकियों का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह भारतीय इतिहास और संस्कृति का उत्सव है। गणतंत्र दिवस के आयोजन में झांकियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और परेड के जरिए देश की विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित किया जाता है। यह अवसर युवाओं को अपने देश की सांस्कृतिक विविधता को करीब से जानने और उसकी प्रशंसा करने का मौका देता है। स्कूलों और कॉलेजों में इस दिन को उत्सव के रूप में मनाया जाना चाहिए, ताकि युवा इसे एक प्रेरणा के रूप में देख सकें। इतिहास की समझ से ही वे अपने देश के संघर्ष और उपलब्धियों की गहराई को महसूस कर सकते हैं।

गणतंत्र दिवस की प्रासंगिकता केवल अतीत की घटनाओं तक सीमित नहीं है। यह भविष्य के लिए एक दिशा दिखाने वाला दिन है। युवाओं को यह समझने की जरूरत है कि वे अपने कार्यों और विचारों से देश के भविष्य को आकार दे सकते हैं। यह दिन उन्हें यह प्रेरणा देता है कि वे अपने कौशल और ज्ञान का उपयोग समाज के उत्थान के लिए करें। वे न केवल अपने अधिकारों का प्रयोग करें, बल्कि दूसरों को भी उनके अधिकार दिलाने में मदद करें। गणतंत्र दिवस उन्हें यह सिखाता है कि हर व्यक्ति की भागीदारी से ही एक सशक्त और प्रगतिशील समाज का निर्माण किया जा सकता है।

गणतंत्र दिवस केवल एक ऐतिहासिक दिन नहीं है, बल्कि यह युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह दिन उन्हें अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करता है। यह उन्हें यह सिखाता है कि देशभक्ति केवल एक भावना नहीं है, बल्कि यह एक सक्रिय जिम्मेदारी है। संविधान के प्रति सम्मान, सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वाह और इतिहास की समझ ही गणतंत्र दिवस की सच्ची प्रासंगिकता है। आज की युवा पीढ़ी को इस दिन को केवल औपचारिक आयोजन न मानकर इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। जब युवा अपने देश के प्रति गर्व और जिम्मेदारी का भाव अपनाएंगे, तभी गणतंत्र दिवस का असली उद्देश्य पूरा होगा।

बैतूल की बेटियां 26 जनवरी को दिल्ली राजपथ पर पेश करेंगी बधाई नृत्य

बधाई नृत्य से मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक छटा बिखेरेंगी बैतूल की प्रतिभाशाली बेटियां

एकलव्य समिति के महेश इंगले के दल को मिला राष्ट्रीय मंच, जिले में हर्ष

बैतूल। जिले की बेटियां 26 जनवरी को दिल्ली के राजपथ पर भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय और संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के कार्यक्रम 'जयति जय मम भारतम' में मध्य प्रदेश का पारंपरिक बधाई नृत्य प्रस्तुत करेंगी। यह आयोजन पूरे देश से 5 हजार कलाकारों को एक मंच पर लाकर भारतीय संस्कृति और लोक कलाओं को प्रदर्शित करने का एक भव्य प्रयास है।

मध्य प्रदेश से बधाई नृत्य की प्रस्तुति के लिए बैतूल की शिवानी मोहबे, लविका सोनी, कौशल्या उइके और मनीषा सिरसाम का चयन किया गया है। बधाई नृत्य बुंदेलखंड क्षेत्र के सागर जिले की लोक कला है, जो खुशी के अवसरों पर प्रस्तुत किया जाता है। इन बेटियों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुति देने का अवसर मिलना जिले सहित पूरे राज्य के लिए गर्व की बात है। एकलव्य समिति के महेश इंगले के नेतृत्व में इन बेटियों को यह गौरवमयी अवसर प्राप्त हुआ है। महेश इंगले ने कहा कि यह जिले के लिए सम्मान की बात है। यदि जनप्रतिनिधियों का सहयोग मिले तो हर वर्ष जिले के सैकड़ों बच्चे ऐसे बड़े आयोजनों में भाग ले सकते हैं। इस बड़ी उपलब्धि पर एकलव्य लोक कला समिति के कलाकारों, जिले के वरिष्ठ कलाकारों और मित्रों ने बेटियों को शुभकामनाएं और बधाई प्रेषित की है। दिल्ली राजपथ पर बैतूल की बेटियां अपनी संस्कृति की अनूठी झलक पेश कर जिले का मान बढ़ाएंगी।

गणतंत्र दिवस पर प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों में 'विशेष भोज' होगा

प्रभारी मंत्री श्री पटेल शासकीय हाई स्कूल हमलापुर में आयोजित कार्यक्रम में शामिल होंगे

प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना के तहत गणतंत्र दिवस के अवसर पर 26 जनवरी को जिले के सभी प्राथमिक व माध्यमिक शासकीय स्कूलों में विद्यार्थियों के लिये सब्जी, खीर, पुड़ी, हलवा व इसके साथ मिठाई का विशेष भोज आयोजित किया जाएगा। इसी क्रम में शासकीय हाई स्कूल हमलापुर में आयोजित विशेष भोज कार्यक्रम में जिले के प्रभारी मंत्री व लोक स्वास्थ्य चिकित्सा शिक्षा मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी भी शामिल होंगे। गणतंत्र दिवस पर जिले के स्कूलों में होने वाले विशेष भोज की व्यवस्थाओं के लिये अधिकारियों की भी ड्यूटी लगाई गई है।

आज 'भारत पर्व' पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे

देशभक्ति गीत व 'कथक' नृत्य की होगी प्रस्तुति, प्रदर्शनी भी लेगेगी

बैतूल। गणतंत्र दिवस के अवसर पर 26 जनवरी की शाम 7 बजे से लोकतंत्र का लोकोत्सव 'भारत पर्व' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम बैतूल में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे तथा ''हमारा संविधान हमारा स्वाभिमान'' कार्यक्रम अंतर्गत भारत के संविधान तथा हमारे संविधान निर्माताओं के विषय में जानकारी के लिये चित्र प्रदर्शनी का प्रदर्शन भी किया जाएगा। इस कार्यक्रम में संस्कृति विभाग द्वारा राज्य स्तर से भेजे गये कलाकारों के दल अपनी प्रस्तुति देंगे। इनमें सुश्री माला उईके एवं साथियों द्वारा देशभक्ति गीत और डॉ आलोक श्रीवास एवं साथियों द्वारा कथक नृत्य प्रस्तुत किया जाएगा।

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का समापन कार्यक्रम 27 जनवरी को

ग्राम पंचायतों व नगरीय क्षेत्र के वार्डों में आयोजित कार्यक्रमों में होगा हितलाभ वितरण

बैतूल। मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान 11 दिसम्बर से 26 जनवरी तक संचालित हुआ। इस अभियान का राज्य स्तरीय समापन कार्यक्रम इन्दौर के सांवेर में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में आयोजित होगा। कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने बताया कि शासन के निर्देश अनुसार सभी ग्राम पंचायतों एवं नगरीय निकायों के वार्ड स्तर पर भी समापन कार्यक्रम आयोजित कर जनकल्याण अभियान के दौरान चिन्हित हितग्राहियों को उनकी पात्रता के अनुसार शासन की योजनाओं से लाभान्वित किया जाएगा। पंचायत एवं नगरीय निकायों में आयोजित कार्यक्रमों में राज्य स्तरीय कार्यक्रम का वेबकास्ट के माध्यम से प्रसारण किया जाएगा तथा हितग्राहियों को स्थानीय जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में हितलाभ वितरण भी किया जाएगा।

गणतंत्र दिवस पर बैतूल में प्रभारी मंत्री श्री पटेल फहराएंगे राष्ट्रीय ध्वज

बैतूल। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस जिले में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। जिला स्तरीय कार्यक्रम पुलिस ग्राउंड में आयोजित होगा। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिले के प्रभारी मंत्री व लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्य मंत्री मध्यप्रदेश शासन नरेंद्र शिवाजी पटेल राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे।

मिनट टू मिनट कार्यक्रम- निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मुख्य अतिथि प्रभारी मंत्री श्री पटेल प्रातः 9 बजे राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे। इसके बाद मुख्य अतिथि परेड निरीक्षण करेंगे, मुख्यमंत्री जी के संदेश का वाचन कर प्रातः 9.35 बजे मार्चपास्ट की सलामी लेंगे और इसके बाद प्रातः 10 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम स्कूली विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किये जायेंगे तथा प्रातः 10:50 बजे से झांकियों का प्रदर्शन तथा प्रातः 11:20 बजे से उत्कृष्ट कार्य के लिये अधिकारी, कर्मचारियों को व उत्कृष्ट प्रस्तुतियों के लिये विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण किया जाएगा।

अनोखी पहल: गांव के बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने ग्रीन आर्मी युवा मंडल ने बैतूल बाजार में शुरू किया 'विद्या दान केंद्र'

गांव के बच्चों को शिक्षित बनाने ग्रीन आर्मी युवा मंडल ने बैतूल बाजार में शुरू किया विद्या दान केंद्र

बैतूल। ग्रीन आर्मी युवा मंडल बैतूल बाजार ने गांव के गरीब एवं जरूरतमंद बच्चों को शिक्षित बनाने के उद्देश्य से 'विद्या दान केंद्र' की शुरुआत की है। मंडल के सदस्यों ने बताया कि गरीब और जरूरतमंद बच्चों के लिए ग्रीन आर्मी विद्या दान केंद्र कोचिंग सेंटर की शुरुआत 15 जनवरी को बैतूल बाजार में की गई है। बैतूल बाजार के सरस्वती स्कूल भवानीपुरा और अंबेडकर वार्ड इमली चौक के पास विद्या दान केंद्र कोचिंग सेंटर संचालित है। इस केंद्र का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्रदान करना और उनकी प्रतिभाओं को निखारना है। केंद्र में बच्चों को केवल स्कूल का पाठ्यक्रम ही नहीं पढ़ाया जाएगा, बल्कि उनकी दक्षताओं और व्यवहारिक ज्ञान को भी बढ़ावा दिया जाएगा। एनजीओ के अध्यक्ष गजेंद्र पवार ने कहा कि हम बच्चों की योग्यताओं पर ध्यान देंगे और उन्हें ऐसी शिक्षा देंगे, जो उनके जीवन को सही दिशा में ले जाए। हमारा उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान देना नहीं है, बल्कि बच्चों को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाना है। बच्चों को उनकी रुचियों और क्षमताओं के आधार पर शिक्षित किया जाएगा। अंग्रेजी, संस्कृत और गणित जैसे कठिन विषयों को सरल तरीके से सिखाया जाएगा। जीवन कौशल और व्यावहारिक ज्ञान पर विशेष जोर दिया जाएगा।

15 जनवरी से की शुरूआत- ग्रीन आर्मी युवा मंडल ने वरिष्ठ शिक्षकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और राजनैतिक प्रतिनिधियों की उपस्थिति में 15 जनवरी को एक भव्य कार्यक्रम आयोजित कर 'विद्या दान केंद्र' की शुरुआत की। यह विद्या दान केंद्र उनकी समाज सेवा की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम है। उल्लेखनीय है कि ग्रीन आर्मी युवा मंडल ने कई सामाजिक कार्य किए हैं। पूर्व में पर्यावरण संरक्षण के तहत पौध रोपण अभियान सहित ग्रामीण क्षेत्रों में कई जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं।

15वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित

विद्यार्थियों और अधिकारी, कर्मचारियों ने ली निष्पक्ष मतदान की शपथ

बैतूल। 15 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर 25 जनवरी को कलेक्ट्रेट कार्यालय परिसर में जिला स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन, अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव, उप जिला निर्वाचन अधिकारी मकसूद अहमद, एसडीएम श्री राजीव कहार, डिप्टी कलेक्टर श्री तृप्ति पटेरिया उपस्थित थी। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई। कार्यक्रम में उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री मकसूद अहमद ने निर्वाचक नामावली संक्षिप्त पुनरीक्षण-2025 की विस्तृत जानकारी दी। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत की अक्षत जैन ने निर्वाचन में वोटिंग परसेंटेज बढ़ने पर सभी मतदाताओं को बधाई दी। उन्होंने मतदाताओं से निर्वाचन में इसी तरह अपने मताधिकार का बढ़-चढ़कर उपयोग किए जाने की अपील की। इस दौरान विद्यार्थियों और अधिकारियों-कर्मचारियों को मतदाता शपथ दिलाई गई।

उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारी-कर्मचारियों का किया सम्मान- 15 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर 'वोट जैसा कुछ नहीं, वोट जरूर डालेंगे हम' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को नगद राशि और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। फोटो निर्वाचक नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण-2025 के अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य करने वाले बीएलओ, अधिकारियों, कर्मचारियों, बीएलओ सुपरवाइजर को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। फोटो निर्वाचक नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण 2025 अंतर्गत आयोग द्वारा 18 से 19 आयु वर्ग के नवीन मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में लक्ष्य से अधिक जोड़े जाने पर अधिकारियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इनमें निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी 132-घोड़ाडोंगरी श्री अभिजीत सिंह, सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी शाहपुर श्रीमती सुनयना ब्रम्हे, सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी चिचोली श्री अतुल श्रीवास्तव तथा सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी घोड़ाडोंगरी श्री प्रेम सिंह दीवान शामिल है। निर्वाचन में उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्वीप आइकॉन को भी प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को किया पुरस्कृत- फोटो निर्वाचक नामावली के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण- 2025 अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को कार्यक्रम के दौरान प्रशस्ति पत्र व नगद राशि से पुरस्कृत किया गया। नगद राशि प्रतिभागियों के खाते में पूर्व में अंतरित की जा चुकी है। निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर शासकीय महाविद्यालय आमला कु.वैशाली नरवरे को 5 हजार नगद राशि और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार द्वितीय स्थान पर जेएच कॉलेज के जितेश मालवीय को 3 हजार और प्रशस्ति पत्र तथा तृतीय स्थान पर शासकीय महाविद्यालय भैंसदेही कु. प्रगति बारपेठे को 1500 रुपए और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार के रूप में शासकीय कन्या महाविद्यालय बैतूल कु. दिशा वागद्रे को 5 हजार और प्रशस्ति पत्र, द्वितीय स्थान पर शासकीय महाविद्यालय सारणी की कु. डॉली साहू को 3 हजार और प्रशस्ति पत्र तथा तृतीय स्थान पर शासकीय महाविद्यालय आमला की कु. पूजा सोनी को 1500 और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम शासकीय महाविद्यालय घोड़ाडोंगरी कु. रोशनी धुर्वे को 5 हजार और प्रशस्ति पत्र, द्वितीय स्थान पर शासकीय महाविद्यालय मुलताई कु. पलक गोहित को 3 हजार और प्रशस्ति पत्र तथा जेएच कॉलेज की कु. ममता कटारे को तृतीय पुरस्कार के रूप में 1500 की राशि और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। वाद-विवाद प्रतियोगिता पक्ष में प्रथम स्थान पर शासकीय महाविद्यालय भैंसदेही की कु. अंजलि वागद्रे को 5 हजार और प्रशस्ति पत्र, द्वितीय पुरस्कार के रूप में शासकीय महाविद्यालय आमला कु.स्नेहा बोस को 3 हजार और प्रशस्ति पत्र तथा शासकीय महाविद्यालय घोड़ाडोंगरी कु.निशा उईके को 1500 और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार वाद विवाद प्रतियोगिता विपक्ष में शासकीय महाविद्यालय आमला कु. वैशाली नरवरे को 5 हजार और प्रशस्ति पत्र, द्वितीय जेएच कॉलेज कु.भाग्यश्री पंडाग्रे को 3 हजार और प्रशस्ति पत्र तथा तृतीय पुरस्कार के रूप में शासकीय महाविद्यालय घोड़ाडोंगरी श्री दीपक साहू को 1500 की राशि और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। नगद राशि प्रतिभागियों के खाते में पूर्व में अंतरित की जा चुकी है।

बैतूल में पहली बार मिस्टर और मिस स्वदेशी प्रतियोगिता का होगा आयोजन

सांस्कृतिक कार्यक्रमों और प्रतियोगिताओं से सजेगा स्वदेशी मेला

27 जनवरी को भूमि पूजन, 10 दिन चलेगा स्वदेशी मेले का उत्सव

बैतूल। पुलिस ग्राउंड में 1 फरवरी से 10 फरवरी तक स्वदेशी मेले का भव्य आयोजन किया जा रहा है। यह मेला स्वदेशी जागरण मंच के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना और स्थानीय उद्योगों को पहचान दिलाना है। 27 जनवरी को सायं 4 बजे मेले का भूमि पूजन होगा, जिसमें शहर के गणमान्य नागरिक शामिल होंगे।

स्वदेशी मेला संयोजक धर्मेंद्र परिहार ने बताया कि मेले की तैयारियां जोरों पर हैं। इसमें विभिन्न प्रकार के स्टॉल लगाए जाएंगे, जहां स्थानीय और स्वदेशी उत्पादों का प्रदर्शन किया जाएगा। ज़िला संयोजक निलेश गिरी गोस्वामी ने बताया कि मेले में विशेष रूप से जनजाति थीम पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रमुख रश्मी साहू ने जानकारी दी कि 10 दिन तक चलने वाले इस मेले में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की भव्य प्रस्तुति होगी, जो जनजातीय परंपराओं और भारतीय संस्कृति को उजागर करेगी। मेले में विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। प्रतियोगिता प्रभारी नीलम वागद्रे ने बताया कि मेहंदी प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रम मेले का मुख्य आकर्षण होंगे। इसके अलावा, पहली बार मिस्टर और मिस स्वदेशी बैतूल प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जा रहा है। यह मेला बैतूल में स्वदेशी उत्पादों और भारतीय परंपरा को बढ़ावा देने का एक अनूठा प्रयास है, जिसमें बच्चों से लेकर बड़े तक सभी के लिए कुछ न कुछ खास होगा। आयोजन समिति ने सभी बैतूलवासियों से मेले में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की है।

उज्जैन में कार ऑटो की टक्कर से पिता-बेटी की मौत

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में शुक्रवार रात सड़क हादसे में पिता और बेटी की मौत हो गई। घटना एमआर-5 रोड में कार और ऑटो की टक्कर से हुई। देर रात हुए सड़क हादसे की खबर लगने के बाद आसपास के रहवासियों ने चक्काजाम कर दिया। उनका आरोप था कि इस जगह पर आए दिन लोग दुर्घटना का शिकार होते हैं, लेकिन प्रशासन ने आज तक स्पीड ब्रेकर नहीं बनवाए। शुक्रवार रात ऑटो चालक शेख जीशान (38) पत्नी शहाना (30) बेटे आरिल और 6 माह की बेटी अनाविया को लेकर तोपखाने ससुराल गए थे। देर रात ढांचा भवन में घर लौटे समय आलोक इंटरनेशनल स्कूल के सामने से टर्न लेते समय सामने से आ रही कार ने उन्हें टक्कर मार दी।

यह भी खूब: सड़क निर्माण वह भी चर्चा में..!

नर्मदापुरम। वार्ड नंबर 02 इन दिनों काफी सुर्खियों में है यहां के रिहायशी पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष की चिट्ठी की के बाद वार्ड नंबर 02 में द्वारकाधीश से जगदीश मंदिर सड़क निर्माण में चीह्न चीह्न कर लोगों के घरों की सीढ़ियां तोड़ देने की चर्चा हैं। जबकि संस्कृत विद्यालय सहित अन्य लोगों के घरों की सीढ़ियां अतिक्रमण में होने के बावजूद नहीं तोड़ी गईं। रहवासी को इसे लेकर नाराजगी जता रहे हैं। फिर नालियों सहित कचरे घर की तरफ कोई ध्यान नही दिया जा रहा है। सड़क निर्माण में नालियां क्षतिग्रस्त कर दी गई हैं। ना पाइप लाइन का ध्यान नही रखा जा रहा है। जिन्हें बनाने के लिए फिर कभी भी इनके लिए सड़क तोड़ी जाएगी।

विधायक स्वेच्छिक निधि दुरुपयोग की प्रमुख सचिव को शिकायत..

सूची में आएं नाम से मचा हड़कंप..

नर्मदापुरम। होशंगाबाद इटारसी विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 137 में विधायक स्वेच्छिक निधि के दुरुपयोग किए जाने की खबर को लेकर विधानसभा क्षेत्र के सभी लोग हक्का बक्का है। ईमानदार विधायक कहे जाते डॉ सीतासरन शर्मा जो विधानसभा अध्यक्ष रह चुके द्वारा स्वेच्छिक निधि का दुरुपयोग किया है..! मानने को तैयार नहीं.. पर दस्तावेजी सबूतों के साथ आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष सीताशरण पाण्डेय आरटीआई विंग द्वारा प्रमुख सचिव से की है, उसे लोग झुठला नहीं पा रहे। विधानसभा क्षेत्र क्रमांक 137 में विधायक स्वेच्छिक निधि का दुरुपयोग हुआ है के जो दस्तावेज़ आए हैं लोग उसे लेकर हतप्रद है। सूची में लाभांवित लोगों के फोन घनघनाएं जा रहें हैं। विधानसभा अध्यक्ष रहे डॉ सीतासरन शर्मा नियम कानून तो जानते हैं फिर उनसे चूक हुई होगी लोग इसे लेकर शंका कुशंकाओं में है। लेकिन यह सोलह आने सच है कि विधायक जी ने स्वेच्छिक निधि जिन्हें जरूरत मंद मानकर दी उसमें अधिकांश अपात्र और चहेतों को भुगतान किया गया है। जबकि शासन प्रत्येक विधायक को उनकी विधानसभा में गरीबों, अनाथों तथा अपंगों को पात्रता और शासन के दिशा निर्देशानुसार ही स्वेच्छिक निधि से आर्थिक सहायता देने की अनुमति देता है यहां वह सीमा टूटी है। फिर विधायक की अनुशंसा के बाद नियम है कलेक्टर की नैतिक जिम्मेदारी होती है। जिन्हें निधि दी जाती है उनसे उपयोगिता प्रमाण पत्र लिया जाना चाहिए। वह देखे शासन द्वारा दी जाने वाली राशि का भुगतान उचित अथवा पात्र लोगों को हो रहा है या नहीं आम आदमी पार्टी जिलाध्यक्ष सीताशरण पाण्डेय आरटीआई विंग ने इस मसले में प्रशासनिक मुखिया पर भी अंगुलियां उठाई है दोषी पाए जाने पर उनके विरुद्ध भी वैधानिक कार्रवाई करने हेतु प्रमुख सचिव को भेजी है। शिकायत में स्पष्ट लिखा है कि शासकीय धन राशि का दुरुपयोग करने वाले पर विधि सम्मत नहीं करने पर वे 60 दिन बाद नियमानुसार उच्च न्यायालय की शरण में जाने के लिए बाध्य रहेंगे।

गणतंत्र दिवस समारोह 2025

राष्ट्रीय पावन पर्व गणतंत्र दिवस पर
नगर के समस्त नागरिकों को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

नगरपालिका परिषद् आमला नगरवासियों से अपील करती है कि

* जल ही जीवन है, इसे व्यर्थ न बहाएँ।
* नगरपालिका परिषद् के समस्त करों का भुगतान समय से करें।
* जन्म मृत्यु एवं विवाह का पंजीयन समय पर अवश्य कराएँ।
* नगर को साफ–स्वच्छ बनाए रखने में सहयोग प्रदान करें।
* अतिक्रमण एवं अवैध निर्माण जैसी गतिविधियों पर रोक लगाएँ।
* बेटी है तो कल है, बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ।
* नगर को शौच मुक्त शहर बनाने में सहयोग करें।

(श्री नितिन गाडरे)
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद् आमला

(श्री किशोर माथनकर)
उपाध्यक्ष
नगरपालिका परिषद्, आमला

कार्यालय नगरपालिका परिषद मुलताई, जिला बैतूल (म.प्र.)

// जनहित सूचना //

1. नगर पालिका के समस्त करों का भुगतान समय पर करें।
2. निकाय को अतिक्रमण मुक्त करने में सहयोग प्रदान करें।
3. आओ बनाये स्वच्छता सर्वेक्षण 2024 में मुलताई को नम्बर वन।
4. कचरा गाड़ी में ही कचरा डालें। 5. डस्टबिन का उपयोग करें।
6. पानी व्यर्थ न बहाएं। 7. अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें।

(श्रीमती वर्षा गढ़ेकर) अध्यक्ष नगरपालिका परिषद मुलताई
(ओमप्रकाश सिंह भदौरिया) मुख्य नपा अधिकारी नपा परिषद मुलताई
(शिव कुमार माहोर) उपाध्यक्ष नगरपालिका परिषद मुलताई

'बिग बॉस' हारने वाले भी मालामाल हुए

सलमान खान के शो 'बिग बॉस 18' की ट्रॉफी करणवीर मेहरा ने अपने नाम कर ली। विवियन डीसेना, रजत दलाल समेत और भी जो कंटेस्टेंट टॉप-6 में शामिल थे, उन्हें हार का सामना करना पड़ा। हालांकि, हारने के बाद भी ये कंटेस्टेंट मालामाल हो गए। इन्हें इनकी पहचान के मुताबिक हर हफ्ते के हिसाब से फीस मिली। सबसे ज्यादा फीस मिली विवियन डीसेना को, उन्हें 5 लाख रुपए हफ्ते के हिसाब से 75 लाख मिले।

शो जीतने वाले करणवीर मेहरा को घर में रहने की सबसे ज्यादा फीस मिली। करण को इस शो में विवियन से कम फीस मिल रही थी। जहां एक तरफ विवियन को हर हफ्ते 5 लाख रुपए मिले, तो वहीं करण को 3 लाख रुपए दिए गए। 15 हफ्तों में करण को टोटल 45 लाख रुपए फीस मिली। साथ ही शो जीतने के बाद उन्होंने 50 लाख रुपए की प्राइज मनी भी अपने नाम की। यानी उन्होंने इस शो के जरिए 95 लाख रुपए की कमाई कर ली।

सलमान खान का टीवी रिएलिटी शो 'बिग बॉस 18' लगभग साढ़े तीन महीने टीवी पर चलने के बाद ऑफ एयर हो गया। 19 जनवरी की रात ग्रैंड फिनाले हुआ। करणवीर मेहरा और विवियन डीसेना टॉप-2 में पहुंचे। वहीं करणवीर ने बाजी मारते हुए इस शो का खिताब अपने नाम कर लिया। करणवीर ने कलर्स टीवी के लाडले कहे जाने वाले विवियन डीसेना को मात दे दी। विवियन भले ही हार गए, लेकिन इस शो के जरिए उन्होंने तगड़ी कमाई की।

सिर्फ विवियन ही नहीं फिनाले में पहुंचे तमाम कंटेस्टेंट को इस शो के जरिए लाखों रुपए मिले। करणवीर मेहरा और विवियन के अलावा रजत दलाल, ईशा सिंह, चुम दरांग और अविनाश मिश्रा टॉप-6 थे। एक-एक करके सभी को शो से बाहर होना पड़ा और आखिर में सलमान खान ने करण को ट्रॉफी

सौंपी। हारने के बाद भी बाकी बचे कंटेस्टेंट के खाते में लाखों रुपए आए। शुरुआत करते हैं विवियन डीसेना से जो इस शो के रनर अप रहे। वो 'बिग बॉस 18' में सबसे ज्यादा फीस लेने वाले स्टार थे। 'बिग बॉस' के घर में रहने के लिए उन्होंने हर हफ्ते 5 लाख रुपए वसूल किए। ये शो 15 हफ्तों तक चला। इन 15 हफ्तों में विवियन ने 75 लाख की कमाई की।

माना जा रहा था कि सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर और फिटनेस ट्रेनर रजत दलाल भी इस शो को जीत सकते हैं। एल्विस यादव भी उन्हें सपोर्ट करने 'बिग बॉस' के घर में आए थे। इस शो के लिए रजत को हर हफ्ते एक लाख रुपये मिले। यानी हारने के बावजूद फीस के नाम पर वो 15 लाख रुपये अपने घर ले गए। ईशा सिंह ने इस शो के लिए हर हफ्ते 2 लाख रुपये की फीस चार्ज की। इस तरह 15 हफ्तों में फीस के नाम पर उन्होंने 30 लाख रुपये की मोटी रकम वसूली। ईशा और विवियन 'बिग बॉस' से पहले टीवी सीरियल 'सिर्फ तुम' में साथ काम कर चुके हैं।

चुम दरांग 'बधाई दो' और 'गंगूबाई काठियावाड़ी' फिल्म में काम कर चुकीं है। चुम दरांग को भी इस शो के लिए हर हफ्ते 2 लाख रुपये की फीस मिली। 15 हफ्तों में ईशा की तरह उन्होंने भी इस शो के जरिए 30 लाख रुपए की कमाई की। अविनाश मिश्रा का गेम भी इस घर में लोगों को पसंद आया। अपनी शानदार गेम की वजह से ही वो फिनाले तक पहुंचे। हर हफ्ते उन्हें इस शो के लिए 1.5 लाख रुपए की फीस मिली। यानी उनकी टोटल कमाई 22.5 लाख रुपये हुई।

रश्मिका मंधाना संन्यास लेने की तैयारी में

विक्की कौशल और रश्मिका मंदाना की फिल्म 'छावा' का ट्रेलर रिलीज हुआ। एक तरफ जहां विक्की ट्रेलर में दमदार एक्टिंग के साथ एक्शन मोड में नजर आए, रश्मिका मंदाना की भी दमदार झलक देखने को मिली। 'छावा' के ट्रेलर को पसंद किया जा रहा है। लेकिन, इस बीच रश्मिका मंदाना के एक स्टेटमेंट ने उनके चाहने वालों को चौंका दिया। इसमें एक्ट्रेस ने कहा कि वह संन्यास ले सकती हैं।

हिस्टोरिकल पीरियड एक्शन ड्रामा फिल्म 'छावा' के ट्रेलर लॉन्च पर पहुंची रश्मिका मंदाना ने फिल्म में अपने किरदार और एक्सपीरियंस शेयर किए। इस दौरान उन्होंने मीडिया से भी बातचीत की। उनके कई सवालों के जवाब देते हुए कहा कि वे अब संन्यास ले सकती हैं। एक्ट्रेस की यह बात सुनकर उनके चाहने वालों को झटका लग सकता है।

ट्रेलर लॉन्च इवेंट में रश्मिका मंदाना ने कहा कि साउथ से आने वाली एक लड़की के लिए महारानी का किरदार निभाना सम्मान की बात है। यह जीवन का सबसे खास और भाग्यशाली पल है। मैं अभी लक्ष्मण जी से कह रही थी, कि मुझे लगता है कि मैं इस रोल के बाद खुशी से रिटायर भी हो सकती हूं।

रियल बॉक्स

पुराने सिनेमाघरों के साथ कई यादें भी खो गईं

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

बदलते समय के साथ बहुत कुछ बदला। जीने का अंदाज, नई जरूरतें, सुविधाएं और यहां तक कि मनोरंजन का तरीका भी नए ज़माने के साथ बदल गया। याद कीजिए दो-तीन दशक पहले फिल्म देखने का आनंद कैसा था! तब आज की तरह घर बैठे टिकट बुक नहीं होते थे और न सीटें आरामदायक होती थीं। उस समय सिनेमाघर की टिकट खिड़की में हाथ घुसाकर मुट्ठी में टिकट थामकर मसले हुए टिकट ऐसे लगते थे जैसे जंग जीतने का प्रमाण पत्र मिल गया हो। उसके बाद हॉल में तीन घंटे तक फिल्म के साथ-साथ कई तरह के मनोरंजन की बात ही अलग थी। आज वो सिर्फ याद बनकर रह गया। अब न वैसे सिनेमाघर बचे न दर्शक। सिंगल स्क्रीन तो करीब-करीब ख़त्म ही हो गए। उनकी जगह ब्रांडेड मल्टीप्लेक्स ने ले ली। पहले 3 रुपए 20 पैसे में दर्शक बॉलकनी में अकड़कर बैठता था, आज वही टिकट 500 रूपए से शुरू होकर एक हजार रूपए से ज्यादा में मिलता है। उसमें भी सुविधा के मुताबिक पैसे लिए जाते हैं। तात्पर्य यह कि अब दर्शकों का फिल्म देखने अंदाज ही नहीं बदला, सुविधाएं भी जेब पर असर डालने लगी।

फिल्में बनना, उनका रिलीज होना और फिर थिएटर में जाकर दर्शकों का उन्हें एंजॉय करना, मनोरंजन की दुनिया में ये सब रोज होता आया है। इसके पीछे सिर्फ एक ही मकसद होता है कि दर्शकों को अपनी फिल्म तक खींचना और उसके जरिए कमाई करना। आज करीब हर शहर में मल्टीप्लेक्स थियेटर हैं, जहां दर्शक आरामदायक सीटें, बेहतर साउंड क्वालिटी के साथ फ़िल्म एंजॉय करते हैं। लेकिन, पीछे मुड़कर देखा जाए, तो एक दौर वह भी था, जब सिर्फ सिंगल स्क्रीन सिनेमाघर हुआ करते थे। फिर भी इनका अलग ही क्रेज था। दर्शकों को थियेटर की सुविधाओं से कोई वास्ता नहीं था। बस बैठने के सीट हो और सामने परदे पर जब फिल्म दिखाई दे कोई अड़चन न आए। पुराने समय में फिल्में बनाना भी कम बड़ी चुनौती नहीं थी। क्योंकि, उस समय काल में फिल्म बनाने की तकनीक आज की तरह विकसित नहीं थी। फिल्म पूरी होने के बाद हर निर्माता-निर्देशक की उम्मीद होती है कि उसे बेहतर ढंग से रिलीज किया जा सके। पहले उनकी इस उम्मीद को सिंगल स्क्रीन पूरा करते थे, आज वही भूमिका मल्टीप्लेक्स निभाते हैं।

अब तो फिल्म का अर्थशास्त्र बदल गया। पहले सिल्वर और गोल्डन जुबली यानी 25 और 50 हफ्ते चलने वाली फिल्म ही सुपर हिट कहलाती थी। आज तो पहले शो से अंदाजा लगा लिया जाता है। दो या तीन हफ्ते चलने वाली फिल्म भी हिट हो जाती है। इसलिए कि अब फिल्म कमाई सिर्फ दर्शकों के टिकट की खरीद पर ही निर्भर नहीं रह गई। फिल्मकारों ने इस कारोबार में ऐसे कई नए विकल्प खोज लिए, जो उनकी कमाई के नए रास्ते खोलती है। फ़िल्मों के डिजिटल, सैटेलाइट और म्यूजिक राइट्स बेचकर भी फिल्म निर्माता पैसे कमाता है। फिल्मों के रीमेक, प्रीक्वल, सीक्वल, और डबिंग राइट्स बेचकर भी कमाई की जाती है। इसके अलावा ओवरसीज राइट्स, म्यूजिक राइट्स से भी पैसा कमाया जाता है। इसके बाद फिल्म के प्रदर्शन पर निर्भर है कि फिल्म से कितना मुनाफा होगा।

कई निर्माता विदेश में शूटिंग करके मिलने वाली छूट से भी कमाई करते हैं। जैसे लंदन में शूटिंग करके। इसके बाद आता है बॉक्स ऑफिस। लेकिन, यह सब फिल्म के प्रदर्शन पर निर्भर होता है। यदि फिल्म दर्शकों की पसंद पर खरी उतरी तो सारे राइट्स से कमाकर देते हैं। यदि ऐसा नहीं हुआ तो सारे राइट्स का कोई मतलब नहीं रह जाता। इस नए ट्रेंड से निर्माता को

ये फ़ायदा हुआ कि भले ही उसकी फिल्म नहीं चले पर प्रोडक्शन कास्ट तो निकल ही आती है। याद करें राज कपूर की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' को। इस फिल्म की असफलता ने उन्हें करीब-करीब बर्बाद कर दिया था। जबकि, आज यह स्थिति किसी निर्माता के सामने होती, तो हालात इतने बुरे नहीं होते।

बड़े परदे पर फ़िल्में देखने की शुरुआत सिंगल स्क्रीन सिनेमाघरों से ही हुई। सिंगल स्क्रीन थिएटर्स की परिभाषा इसके नाम में ही छुपी है। सिंगल स्क्रीन उन्हें कहा जाता है, जहां एक स्क्रीन हो और उस पर रोज फिल्म के 4 शो दिखाए जाते हैं। अकेला स्क्रीन होने की वजह से इन्हें सिंगल स्क्रीन सिनेमाघर कहा जाता है। कुछ ऐसे थिएटर आज भी बड़े शहरों में मिल जाते हैं। आज के दौर में सिंगल स्क्रीन सिनेमाघरों की तुलना में मल्टीप्लेक्स का क्रेज बढ़ गया। ऐसे सिनेमाघर वे होते है, जहां एक से ज्यादा स्क्रीन होती हैं। कई अलग-अलग फिल्में एक साथ चलती हैं। आज मल्टीप्लेक्स का चलन बहुत ज्यादा बढ़ गया। इनकी बनावट और सीट का दायरा भी अलग रहता है। जहां सिंगल स्क्रीन सिनेमाघर में फर्स्ट क्लास और बालकनी के दो सीटिंग फॉर्मेट होते हैं। वहीं, मल्टीप्लेक्स थिएटर इससे अलग नजर आते हैं। मल्टीप्लेक्स में सीटिंग फॉर्मेट प्लैटिनम, गोल्ड और सिल्वर कैटेगरी के हिसाब से बंटा होता है।

मुंबई में 1947 में लिबर्टी सिनेमाघर बना था। इस सिनेमा हॉल को हबीब हुसैन ने बनाया था और इसका आर्किटेक्चर फ्रांस से प्रभावित रहा। यह आजादी का साल था, इसलिए इसका नाम 'लिबर्टी' रखा गया। ये अपने आप में कुछ खास सिनेमाघर रहा। इस सिनेमाघर में फिल्म का प्रदर्शन खास हुआ करता है। 1960 में फिल्म 'मुगल ए आजम' का प्रीमियर हुआ था। यहां 'मदर इंडिया' 25 अक्टूबर 1957 को रिलीज हुई थी। यह फिल्म पूरे साल यहां लगी रही, जो अपने आप में उस दौर का 1 रिकॉर्ड था। इसके बाद 1994 में सलमान खान और माधुरी दीक्षित की फिल्म 'हम आपके हैं कौन' इस सिनेमाघर में 105 दिनों तक चली थी। राज कपूर भी इस सिनेमाघर के मुरीद रहे। उनकी कई बड़ी फ़िल्में यहां रिलीज हुई, उनमें 'राम तेरी गंगा मैली' भी थी। यहां प्रेस प्रीव्यू और प्राइवेट स्क्रीनिंग के लिए इसकी पांचवी मंजिल पर 30 सीट का 'लिबर्टी मिनी' भी बनाया गया था।

मध्य प्रदेश के सबसे बड़े शहर इंदौर में 20 साल पहले तक 30 से ज्यादा सिंगल स्क्रीन टॉकीज थे। लेकिन, अब वो स्थिति नहीं रही। अब यहां देश के सभी बड़े ब्रांड वाले मल्टीप्लेक्स के साथ ओपन एयर ड्राइव इन थिएटर भी है। इस बीच इंदौर के एक व्यवसायी ने सिंगल स्क्रीन सिनेमा की यादों को धरोहर के रूप में संजो लिया। यह देश का अकेला सिंगल स्क्रीन म्यूजियम है। इसमें इंदौर के 30 से ज्यादा टॉकीज से जुड़े फोटो, टिकट, स्लाइड, प्रोजेक्टर, पोस्टर्स सहित कई चीजें रखी गई हैं। 1917 से लेकर 2000 के दशक तक का कलेक्शन है। विनोद जोशी को सिनेमा से जुडी यादें सहेजने का शौक 1983 से था। लेकिन, 2015 में उन्होंने इस शौक को इस तरह पूरा किया। उन्होंने अपने म्यूजियम की टिकट दर भी इतनी ही रखी है, जितनी उस दौर में सिनेमा की टिकट (1 रुपए 60 पैसे) थी। इस थिएटर को देखने में करीब आधा घंटा लगता है। उनके कलेक्शन में किस साल, किस महीने में, किस टॉकीज में कौन सी पिक्चर चली, उसके विज्ञापन, पोस्टर कैसे होते थे वह सब शामिल है। प्रोजेक्टर से परदे पर फिल्म कैसे दिखाई जाती थी, उसे वे खुद प्रोजेक्टर चलाकर बताते हैं। इंटरवल में विज्ञापन के रूप में कौन-कौन सी स्लाइड चलती थी। नई फिल्मों के ट्रेलर की स्लाइड भी दिखाते हैं। उन्होंने इंदौर के पुराने श्रीकृष्ण टॉकीज का भी मॉडल बनवाया। ऐसे ही अन्य टॉकीजों के भी मॉडल हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

वेब सीरीज
द रोशंस

अंडर रेटेड रोशन से टॉप रेटेड तक की दास्तान

अशोक जोशी

सिनेमा एक ऐसा माध्यम है, जिसमें चारों तरफ जगमगाहट और हलचल तथा शोर शराबा होता है। यह ऐसी काजल की कोठरी है जिसमें कालिख का लगना लाजमी है। फिर भी यहां कुछ ऐसे परिवार हुए हैं जिन पर सिनेमा की चकाचौंध का

जादू नहीं चला। यदि यह कहा जाए कि इनकी तबीयत कुछ ऐसी है कि यह लीक से हटकर तो चलते रहे, लेकिन इन्होने अपनी शर्तों से कभी समझौता नहीं किया। यही कारण है कि उम्दा काम और बेहतर नाम के बावजूद इनके काम को वह नाम नहीं मिला जिसके यह हकदार थे।

रोशन परिवार की दूसरी और तीसरी पीढ़ी ने बेहतरीन काम के साथ समय की धारा के साथ बहते हुए न केवल अपनी राह बनाई। अपने और अपने परिवार का नाम भी रोशन किया। बस, इतनी सी कहानी है रोशन परिवार की जिसकी तीन पीढ़ियों ने मनोरंजन की दुनिया को तो रोशन किया, जब तब अंधकार से ही रूबरू होना पड़ा। जैसा कि दस्तूर है कि रोशनी को कभी छिपाकर नहीं रखा जा सकता है, आज रोशन्स का नाम सिने आकाश में शिद्दत के साथ रोशन हो रहा है। सिने जगत में पिछले छह दशक से रोशन इस परिवार के इसी फिल्मी सफरनामे और फिल्म इंडस्ट्री में इनके अमूल्य योगदान और सफर पर नेटफ्लिक्स डाक्यूड्रामा सीरीज 'द रोशंस' लाया है।

शो की शुरुआत में ऋतिक टेप रिकॉर्डर में अपने दादाजी का हाल ही में खोजा गया गाना बजाते हैं। बाद में कहते हैं एक बहुत ही दिलचस्प कहानी है, कैसे हमारे परिवार का सरनेम नागरथ से रोशन हो गया। इसी शो से भी पता लगता है कि जिस रोशन परिवार को ज्यादातर लोग पंजाबी परिवार से जुड़ा मानते थे वास्तव में वे कश्मीरी ब्राह्मण परिवार की पौध है। रोशन परिवार के बारे में आज के दर्शक इतना भर जानते हैं कि 25 साल पहले अभिनेता ऋतिक रोशन ने फिल्म 'कहो ना प्यार से' अभिनय में कदम रखा था। फिल्म की सफलता ने उन्हें रातों रात स्टार बना दिया था। इस फिल्म के निर्देशक ऋतिक के पापा राकेश रोशन थे।

राकेश रोशन ने भी फिल्म इंडस्ट्री में अपनी पारी अभिनय से आरंभ की थी। लेकिन, उनकी प्रतिभा को वह सम्मान नहीं मिला। उन्होंने निर्देशन में हाथ आजमाया और शोहरत हासिल की। उनके भाई राजेश रोशन ने संगीत की राह पकड़ी। दोनों भाइयों के इंडस्ट्री में आने का आधार बने थे उनके पिता संगीतकार रोशन। वही रोशन जिन्होंने हिंदी सिनेमा को बड़े अरमानों से रखा है ... सारी सारी रात तेरी याद सताए, रहते थे कभी जिनके दिल में, रहें न रहें हम न महका करेंगे ...मन रे तू काहे, जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा, तुम अगर मुझको न चाहो तो कोई बात नहीं, जिंदगी भर नहीं

भूलेगी वो बरसात की रात जैसे कई यादगार गानों को संगीतबद्ध किया है।

पिछले करीब छह दशक में रोशन परिवार की तीन-चार एपिसोड की इस सीरीज की शुरुआत 'रहे न रहे हम महका करें' गाने की तरह संगीत की दुनिया में महक रहे राकेश के पिता और ऋतिक के दादा रोशन से होती है, जिनका वास्तविक नाम रोशन लाल नागरथ था। उनके नाम को बाद में सरनेम की तरह अपना लिया गया। यह भी एक नई बात है, क्योंकि अभी तक तो यही प्रचारित किया जाता रहा है कि बच्चन परिवार वह पहला परिवार है जिसने अपने सरनेम श्रीवास्तव को जातिसूचक मानकर बच्चन तख्खलुस को अपना सरनेम बना लिया। इसके दूसरे एपिसोड में राजेश तीसरे में राकेश और चौथे में ऋतिक के जीवन सफर पर आधारित है। यह डाक्यूमेंट्री रोशन परिवार के साथ काम कर चुके या उनके काम से प्रेरित हुई फिल्मी हस्तियों, गायकों, कलाकारों के साक्षात्कारों, अनदेखी पारिवारिक तस्वीरों और रोशन परिवार की सुपरहिट फिल्मों के प्रतिष्ठित दृश्यों और गीतों के जरिए उनके जीवन सफर को दर्शाती है। रोशनलाल नागरथ से आरम्भ होकर ऋतिक रोशन पर पूरी होने वाली इस श्रृंखला को देखने के बाद यह अनुभव होता है कि दिल अभी भरा नहीं। निर्देशक शशि रंजन ने एक एक घंटे के चार एपिसोड में कहने को तो बहुत कुछ कह दिया। पहले एपिसोड में रोशन की कहानी दिखाई गई। फिर राजेश रोशन की, फिर राकेश रोशन की और फिर बारी आती है ऋतिक की। ये चारों कहानियां अपने आप में कमाल हैं। ये अपने दिखाती है कि टैलेंट से ही नाम रोशन होता है।

वंश परिवार की बेल ज्यादा ऊपर तक नहीं फैलती है। कुछ बनने के लिए बहुत कुछ खपना भी पड़ता है। छोटे बेटे को उन संगीतकारों का सहायक बनकर अपना करियर आरम्भ करना पड़ा, जो कभी रोशन के आगे सिर झुकाया करते थे। इस सीरीज को 4 एपिसोड्स में बांटा गया है। हर एपिसोड रोशन परिवार के उस पीढ़ी के प्रतिनिधि के नाम पर तराशा

गया। इसकी शुरुआत रोशन से होती है।

इंडस्ट्री में संगीतकार रोशन के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। रफी की आवाज में चित्रलेखा का गीत 'मन रे तू काहे न धीर धरे' जिसे उससे रोशन के पूरे संगीत का आकलन किया जा सकता है। इसी तरह मुकेश के साथ 'ओहो रे ताल मिले नदी के जल में' गाने की सादगी और स्वाभाविकता तथा लता के साथ 'रहें न रहें हम' की शाश्वत सत्यता उनके संगीत के वह बैरोमीटर है, जो उनके कार्य का आकलन करते हैं। कव्वालियों के तो वे शहंशाह थे। बरसात की रात में उनका कमाल अविस्मरणीय है और 'दिल जो न कह सका' और ताज महल के जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा के साथ तो उनका संगीत चरम पर पहुंच गया था।

अपने पिता की विरासत को फिल्म इंडस्ट्री में अगर किसी ने सही मायने में आगे बढ़ाया और संजोया तो उसमें सबसे पहले राजेश रोशन का ही नाम आना चाहिए। महमूद के सहयोग से आगे बढ़े राजेश रोशन ने बाद में सभी बड़े निर्माताओं के साथ काम किया। उनके सिद्धांत ने उन्हें सही अर्थों में अपने पिता का उत्तराधिकारी बना दिया। शो में राकेश रोशन के करियर और उनके करियर की विफलता और सफलता के सफर को दिखाया गया है। अंत में ऋतिक रोशन की जीवनी भी दिखाई गई, जो अभी अधूरी है। उन्होंने अपने डांस, पर्सनालिटी और डेथ से मॉडर्न युग के हीरो की नई परिभाषा गढ़ी और यूथ की पहली पसंद बने। शुरू में ऋतिक का हकलाना, हाथों में एक अंगूठा ज्यादा होना उनकी कमजोरी था। जिस पर उन्होंने जीत हासिल कर युवा दिलों की धड़कन बनने का जो काम किया वह बेमिसाल है।

इस परिवार की सबसे बड़ी ताकत इनके पारस्परिक संबंध है। आज भी परिवार अलग अलग रहते हुए भी एकजुट है। ऋतिक रोशन हीरो बनने तक अपने चाचा राजेश रोशन के साथ ही सोते थे। आज भी उनकी अपने पिता से ज्यादा अपने चाचा से पटती है। एक दूसरे का साथ निभाना और एक दूसरे के लिए खड़े रहने की यह प्रवृत्ति रोशन्स को सबसे अलग रखती है। यही इस सीरीज की यूएसपी भी है। जिसे शशि रंजन ने अपने संबंधों से भुनवा कर सिने जगत के सभी बड़े सितारों और महत्वपूर्ण व्यक्तियों से रोशन परिवार के बारे में अनुभव को जोडकर इसे दिलचस्प बना दिया। इतने सारे सितारों के इंटरव्यू जोड़कर एक कमाल की कहानी बुनना, हर एपिसोड में कुछ अलग डालना, ये अपने आप में कमाल है। इसमें करण जौहर, तरण आदर्श, अनिल कपूर, जावेद अख्तर ,शाहरुख खान, फराह खान, आशा भोंसले, रणवीर कपूर और अभिषेक बच्चन समेत कई सारे कलाकारों के भी टेक लिए गए जिनके साथ रोशन फैमिली का प्रोफेशनल या पर्सनल फ्रंट पर अटेचमेंट रहा था। इसके लिए शशि रंजन ने बहुत मेहनत भी की।

रोशन परिवार की उपलब्धियों को दिखाने के लिए निर्माता राकेश रोशन और शशि रंजन ने फिल्म जगत के सभी क्षेत्रों के लोगों को जोड़ने का प्रयास किया है। रोशन के समकालीन लोग तो अब रहे नहीं लिहाजा कुछ पुरानी रिकॉर्डिंग, पुराने फोटो और कुछ प्रतीकात्मक दृश्यों का नाट्य रूपांतरण का अच्छा प्रयोग किया है। आशा भोसले पुराने लोगों का प्रतिनिधित्व करती हैं तो अमिताभ की जगह भरने के लिए अभिषेक और महमूद की जगह लकी अली और ऋषि कपूर की जगह रणबीर से काम चलाना पड़ा। सितारा हैसियत के बावजूद राकेश रोशन के साथ काम के लिए सहयोग देने वाली रेखा को शामिल नहीं किया जाना खटकता है।

क्या है 76वें गणतंत्र दिवस की थीम?

भारत अपना 76वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस का जश्न पूरे देश में मनाया जाएगा। वहीं हर साल की तरह इस वर्ष भी दिल्ली में गणतंत्र दिवस की परेड मुख्य आकर्षण रहेगी। गणतंत्र दिवस भारतीय संविधान के आधिकारिक तौर पर लागू होने की वर्षगांठ है जिसे लोकतांत्रिक देश के अस्तित्व में आने के उपलक्ष्य में उत्सव की तरह मनाया जाता है। गणतंत्र दिवस 2025 के अवसर पर भारत अपनी समृद्ध विरासत और विकास की यात्रा का उत्सव मना रहा है। गणतंत्र दिवस 2025 की थीम, परेड और पुरस्कार वितरण संबंधी सभी जानकारी इस लेख से मिल जाएंगी। आइए जानते हैं इस वर्ष 76 वें गणतंत्र दिवस की थीम क्या है और इसे कैसे और कहां मनाया जा रहा है।

गणतंत्र दिवस 2025 की थीम

भारत के 76 वें गणतंत्र दिवस 2025 की थीम स्वर्णिम भारत – विरासत और विकास है। ये थीम देश की विरासत को संभालते हुए भारत की प्रगति की यात्रा को दर्शाती है।

परेड का समय और मार्ग

गणतंत्र दिवस की परेड 26 जनवरी 2025 को सुबह 10.30 बजे शुरू होगी। परेड दिल्ली में विजय चौक से शुरू होकर कर्तव्य पथ से होते हुए लाल किले तक जाएगी।

परेड की खासियत

जानकारी के मुताबिक, इस बार की परेड 90 मिनट में पूरी हो जाएगी, जिसकी शुरुआत 300 कलाकारों के साथ होगी और इस परेड में 18 मार्चिंग कंटिजेंट, 15 बैंड और 31 झांकियां शामिल होंगी। इस दौरान कुल 5,000 कलाकार कर्तव्य पथ पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे।

भारत की एकता और संप्रभुता का उत्सव

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 1950 को भारत के संविधान को अपनाने और देश गणतंत्र होने का प्रतीक है। हर साल, इस दिन होने वाले समारोहों में शानदार सैन्य और सांस्कृतिक प्रदर्शन होते हैं, जो इस दिन का महत्व और भी बढ़ा देते हैं। नई दिल्ली में, सशस्त्र बलों के जवान, सैन्य शक्ति का विस्तृत प्रदर्शन करते हुए कर्तव्य पथ पर मार्च करते हैं। इस शुभ दिन पर कर्तव्य पथ पर होने वाले इन लाजवाब शो के सामने, देश भर में होने वाली हर चीज फीकी पड़ जाती है। ये समारोह, जिनका उद्घाटन एक भव्य परेड के साथ किया जाता है, राजधानी, नई दिल्ली में, राष्ट्रपति भवन (प्रेजिडेंट हाउस) के पास रायसीना हिल से, कर्तव्य पथ से होकर, इंडिया गेट से गुज़रते हुए ऐतिहासिक लाल किले तक जाते हैं। इस दिन, कर्तव्य पथ पर औपचारिक परेड निकाली जाती हैं जिसमें भारत, विविधता में इसकी एकता और भारत के राज्यों द्वारा इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सम्मानित करने के लिए सुंदर झांकियां बनाकर पेश की जाती हैं। गणतंत्र दिवस परेड 2025 में झांकी की थीम है - स्वर्णिम भारत - विरासत और विकास

गणतंत्र दिवस 2025 एक संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में भारत की यात्रा में एक और गौरवशाली अध्याय का प्रतीक है। प्रतिवर्ष 26 जनवरी को मनाया जाने वाला गणतंत्र दिवस भारतीय संविधान को अपनाने की याद दिलाता है, जो 1950 में लागू हुआ। यह दिन न केवल भारत के समृद्ध इतिहास और संस्कृति का उत्सव है, बल्कि न्याय, स्वतंत्रता, समानता के मूल्यों की याद भी दिलाता है। और भाईचारा जिसे राष्ट्र कायम रखता है।

गणतंत्र दिवस का ऐतिहासिक महत्व

गणतंत्र दिवस की यात्रा 26 जनवरी, 1950 से बहुत पहले शुरू हो गई थी। भारत ने 15 अगस्त, 1947 को ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की, लेकिन यह अभी भी ब्रिटिश काल से विरासत में मिले कानूनों द्वारा शासित था। नए संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए एक संविधान सभा का गठन किया गया, इस कार्य को पूरा करने में लगभग तीन साल लग गए। 26 जनवरी 1950 को, भारत के संविधान को अपनाया गया, जिससे भारत सरकार के लोकतांत्रिक स्वरूप वाला एक गणतंत्र बन गया। यह तारीख 1930 में पारित पूर्ण स्वराज प्रस्ताव का सम्मान करने के लिए चुनी गई थी, जिसमें भारत के लिए पूर्ण स्वशासन का आह्वान किया गया था।

भारत कैसे मनाता है गणतंत्र दिवस

गणतंत्र दिवस पूरे देश में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह एक राष्ट्रीय अवकाश है, जो ध्वजारोहण समारोहों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और देशभक्ति के उत्साह के साथ मनाया जाता है।

नई दिल्ली में भव्य परेड

नई दिल्ली में राजपथ पर गणतंत्र दिवस परेड समारोह का केंद्रबिंदु है। यह भव्य आयोजन भारत की सैन्य शक्ति, सांस्कृतिक विविधता और तकनीकी प्रगति को प्रदर्शित करता है। परेड की शुरुआत भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने से होती है, जिसके बाद 21 तोपों की सलामी और राष्ट्रगान गाया जाता है।

सैन्य प्रदर्शन – सशस्त्र बलों के टैंक, मिसाइल और रेजिमेंट सही तालमेल में मार्च करते हैं।
सांस्कृतिक झाँकियाँ – भारत के विभिन्न राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली झाँकियाँ उनकी अनूठी परंपराओं, त्योहारों और उपलब्धियों को प्रदर्शित करती हैं।
बच्चों का प्रदर्शन – स्कूली बच्चे नृत्य और दिनचर्या प्रस्तुत करते हैं, जो कार्यक्रम में एक जीवंत स्पर्श जोड़ते हैं।
वीरता पुरस्कार – वीरता पुरस्कार उन व्यक्तियों को प्रदान किए जाते हैं जिन्होंने असाधारण साहस दिखाया हो।

पूरे देश में जश्न

जबकि नई दिल्ली में परेड सबसे प्रमुख है, भारत का हर राज्य और शहर अपने अनूठे तरीके से गणतंत्र दिवस मनाता है। स्कूल और कॉलेज ध्वजारोहण समारोह, सांस्कृतिक कार्यक्रम और संविधान के महत्व पर बहस का आयोजन करते हैं। कई इलाकों में, सामुदायिक समारोहों और देशभक्ति संगीत से वातावरण भर जाता है, जिससे एकता और गौरव की भावना पैदा होती है।

2025 नया क्या है?

गणतंत्र दिवस 2025 निस्संदेह पारंपरिक समारोहों में नए तत्व लाएगा। सरकार से ऐसी नवीन थीम पेश करने की उम्मीद है जो स्थिरता, डिजिटल परिवर्तन और महिला सशक्तिकरण जैसे समसामयिक मुद्दों से मेल खाती हो। अंतरिक्ष अन्वेषण, नवीकरणीय ऊर्जा और प्रौद्योगिकी में भारत की उपलब्धियों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

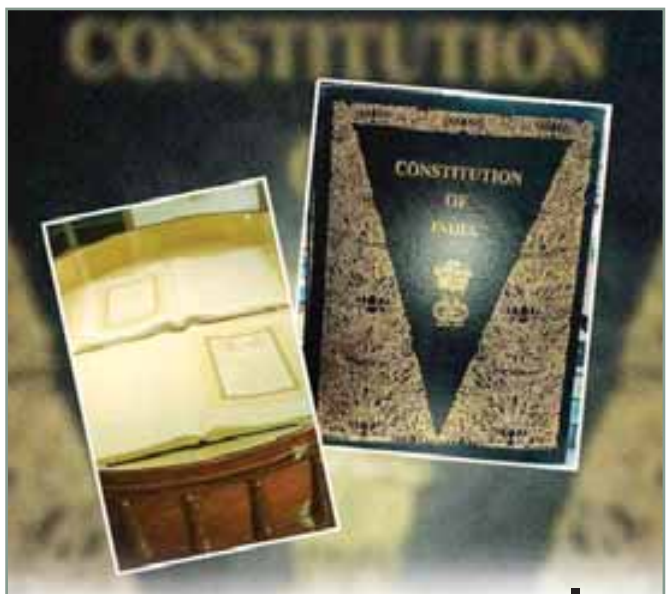

भारत का गणतंत्र

भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ था तथा 26 जनवरी 1950 को इसके संविधान को आत्मसात किया गया, जिसके अनुसार भारत देश एक लोकतांत्रिक, संप्रभु तथा गणतंत्र देश घोषित किया गया। 26 जनवरी 1950 को देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने 21 तोपों की सलामी के साथ ध्वजारोहण कर भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया। यह ऐतिहासिक क्षणों में गिना जाने वाला समय था। इसके बाद से हर वर्ष इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है तथा इस दिन देशभर में राष्ट्रीय अवकाश रहता है। हमारा संविधान देश के नागरिकों को लोकतांत्रिक तरीके से अपनी सरकार चुनने का अधिकार देता है। संविधान लागू होने के बाद डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने वर्तमान संसद भवन के दरबार हॉल में राष्ट्रपति की शपथ ली थी और इसके बाद पांच मील लंबे परेड समारोह के बाद इरविन स्टेडियम में उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज फहराया था।

भारत के संविधान की मूल प्रति आखिर क्यों हीलियम गैस चैंबर में रखी गई?

इस साल भारत अपना 76वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है। इस दिन संविधान आधिकारिक तौर पर लागू हुआ था, लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारतीय संविधान की मूल प्रति कहां है? भारतीय संविधान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान माना गया है। 26 जनवरी 1950 को आधिकारिक तौर पर भारतीय संविधान को लागू किया गया था। इस खास दिन को याद रखने के लिए हर साल भारत गणतंत्र दिवस के तौर पर मनाता है। भारतीय संविधान को विविधता, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक माना गया है। आजादी के बाद संविधान सभा ने हाथ से लिखे दो संविधान के मसौदे किताब के तौर पर तैयार किए थे। एक मसौदा हिंदी और दूसरा अंग्रेजी भाषा में तैयार किया गया था। आज भी ये मसौदे को एक लाइब्रेरी में गैस चैंबर के अंदर बंद हैं, लेकिन क्या आप ये जानते हैं कि संविधान की मूल प्रति को आखिर हीलियम गैस चैंबर को क्यों बंद करके रखा गया है? दुनिया का सबसे बड़ा संविधान आखिर किस जगह पर रखा गया है?

26 जनवरी को ही क्यों लागू हुआ संविधान?

संविधान सभा द्वारा 26 नवंबर 1949 को संविधान अपनाया गया था। वहीं, इसे 26 जनवरी 1950 के दिन लागू कर दिया गया था। दरअसल, ऐसा माना जाता है कि 26 जनवरी 1930 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज दिवस घोषित किया था। इस वजह से इस ऐतिहासिक दिन पर ही संविधान लागू किया गया और हिंदुस्तान को एक एक लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया गया। उस दौरान भारतीय संविधान में 395 अनुच्छेद, 22 भाग और 8 अनुसूचियां थीं।

संविधान की मूल प्रति

संविधान की मूल प्रति को लंबे वक्त तक संरक्षित करना काफी चुनौतीपूर्ण था। दरअसल, इसे हाथों से कागज पर लिखा गया था। शुरुआत में इसे फलालेन के कपड़े के साथ नेफ्थलीन बॉल्स डालकर स्टोर किया जाता था। बाद में इसे हीलियम गैस से भरे चैंबर में स्टोर किया गया। 76 साल बाद भी सविंधान की मूल प्रति अपने उसी स्वरूप में है।

कहां रखा गया है भारतीय संविधान?

भारत के संविधान को संसद की लाइब्रेरी में स्टोर करके रखा गया है। उस दौरान इसे नेफ्थलीन बॉल्स के साथ स्टोरी किया गया था। हालांकि, 1994 में अमेरिका की तरह भारत सरकार ने भी संविधान को वैज्ञानिक विधियों द्वारा तैयार गैस चैंबर में रखने का फैसला किया। इस चैंबर को अमेरिका के गैटी इंस्टीटयूट ने तैयार किया था।

गैस चैंबर में क्यों रखा गया है भारतीय संविधान?

सभी के मन में ये सवाल आता है कि आखिर भारतीय संविधान को हीलियम गैस चैंबर में क्यों रखा गया है, तो बता दें यह एक निष्क्रिय गैस है, जिसमें सालों तक कोई भी चीज सुरक्षित बनी रहती है।

बस कपड़े का टुकड़ा नहीं है तिरंगा

तीन रंगों वाला तिरंगा झंडा यानी हमारी शान, हमारे शौर्य का प्रतीक है। यह बस एक कपड़े का टुकड़ा नहीं है। यह हमारी राष्ट्रीय पहचान है, यह हमारी स्वतंत्रता और एकता का प्रतीक है। यह हमें प्रेरणा देता है और हमें एकजुट रखता है। लेकिन क्या आपको पता है कि इसे बनाते कैसे हैं? इसके लिए किन चीजों की जरूरत पड़ती है?

तिरंगा बनाने की विधि

- कपड़े को तीन समान भागों में काटना होता है। प्रत्येक भाग की लंबाई और चौड़ाई 2:3 के अनुपात में होनी चाहिए।
- केसरिया रंग की पट्टी को सबसे ऊपर रखा जाता है। फिर सफेद रंग की पट्टी और अंत में गहरे हरे रंग की पट्टी रखी जाती है।
- यदि सिलाई मशीन है, तो तीनों पट्टियों की एक साथ सिलाई हो सकती है। यदि आपके पास सिलाई मशीन नहीं है, तो पट्टियों को हाथ से भी सिल सकते हैं।
- सफेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का चक्र बनाएं। आप इसे हाथ से भी बना सकते हैं या बाजार से तैयार चक्र खरीद सकते हैं।

चरण-दर-चरण निर्देश

कपड़े को काटें

सबसे पहले, तीन रंगों के कपड़े को तीन समान लंबाई में कटौती करनी होती है। प्रत्येक पट्टी की लंबाई 2:3 के अनुपात में होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि आपके तिरंगे की लंबाई 90 सेंटीमीटर है, तो प्रत्येक पट्टी की लंबाई 60 सेंटीमीटर होनी चाहिए।

पट्टियों को व्यवस्थित करें

एक बार जब आपके पास तीन पट्टियाँ हों, तो उन्हें निम्नलिखित क्रम में व्यवस्थित करें – केसरिया रंग की पट्टी सबसे ऊपर, सफेद रंग की पट्टी बीच में, गहरे हरे रंग की पट्टी सबसे नीचे

पट्टियों को सिलाई करें

यदि आपके पास सिलाई मशीन है, तो आप पट्टियों को एक साथ सिलाई कर सकते हैं। यदि आपके पास सिलाई मशीन नहीं है, तो आप पट्टियों को हाथ से भी सिल सकते हैं। पट्टियों को सिलाई करते समय, सुनिश्चित करें कि वे एक दूसरे के साथ सीधे और समान रूप से संरेखित हों।

चक्र बनाएं

- सफेद पट्टी के मध्य में गहरे नीले रंग का चक्र बनाया जाता है। इसे हाथ से भी बनाया जा सकता है। बाजार में भी अशोक चक्र खरीद सकते हैं।

तिरंगे के तीन रंगों का अलग अर्थ है –

- केसरिया रंग साहस और बलिदान का प्रतीक है। यह हमें हमारे देश के लिए लड़ने और बलिदान देने के लिए प्रेरित करता है।
- सफेद रंग शांति और सच्चाई का प्रतीक है। यह हमें शांति और सद्भाव के साथ जीने के लिए प्रेरित करता है।
- हरा रंग प्रगति और समृद्धि का प्रतीक है। यह हमें अपने देश को एक समृद्ध और उन्नत देश बनाने के लिए प्रेरित करता है।